२५९।

॥ श्रीः ॥

परिहास-दर्पण।

अर्थात्

भाँति २ के हँसी दिल्लगी तथा उपदेश भरे
चुटकुलोंका नूतनसंग्रह.

जमौर निवासी बाबू रामगुलामरामद्वारा
सम्पादित.

जिसे
श्रीकृष्णदासने
बंबई
"ङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया।

शके १८२२, संवत १९५७.

0152,6RAMx1
DO

सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

PARIHAS-DARPAN.

COMPLIED
BY
BABOO RAM GULAM RAM
OF
JAMORE DISTT: GAYA.

परिहास-दर्पण।

अर्थात्
भाँति २ के हँसी दिल्लगी तथा उपदेश भरे चुटकुलोंका
नूतनसंग्रह.

जमोर निवासी बाबू रामगुलामरामद्वारा सम्पादित
जिसे
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें मुद्रितकर
प्रकट किया।

कार्तिक संवत् १९५७, शके १८२२.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूमिका ।

प्रिय पाठकगण !

जब आप सांसारिक कार्य्योंसे थकितहो विश्रामकी विवेचना करते हो. यदि ऐसे समयमें इस पुस्तकका अवलोकन कियाकरो तो मैं पूर्णआशा करताहूँ कि, आपकी मनोवेदना अवश्य दूर होगी और चित्त प्रफु-ल्लित होजायगा. चाहे मनुष्य कैसेही शोकसागरमें निमग्नहो परन्तु इस पुस्तकके पठनसे अवश्यही उसके मुखपर हास्यचिह्न लक्षित होंगे. यदि इससे आप लोगोंका कुछभी उपकार हुआ तो मैं अपने परिश्रमको सफल मानूँगा.

आप सज्जनोंका कृपापात्र–

रामगुलामराम,

जमोर–गया.

भाद्र शुक्ल ५ सं० १९५५.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिहासदर्प्पणकी—विषयानुक्रमणिका ।

संख्या	विषय	पृष्ठांक.
१	आशिकों की शैर	१
२	हम और तुम ...	१०
३	आँखोंके अन्धे नाम नयन सुख ...	१३
४	बैंगनदास और जन्टिलमेन चौबेका वार्तालाप	१५
५	अन्धे अधिकहैं या समाखे....	१५
६	छुहारेकी गुठली....	१८
७	अन्धेके हाथदीपक	१९
८	बादशाह जार्ज (३)	"
९	मेमसाहिबाकी झिड़की	२०
१०	बदमाशकी बात...	२१
११	देर अशर जहर...	२२
१२	चौबेकी बूटी ...	"
१३	मिती पूजनेको बाकीहै? ...	२३
१४	सुँघनीसे नुकसान	"
१५	परदेशी मियाँ साहब	२४
१६	व्यापारियोंका घोड़ा	२५
१७	परछाँईसे डरेहो	२६
१८	वकीलकी अकल....	"
१९	बादशाहसे बातकी	२७
२०	गालीकी पहुँच ...	"
२१	घड़ीमें क्या बजाहै	२८
२२	उल्लूवसन्त ...	२९
२३	डरपोंक बंगाली...	३२
२४	बहिरा नौकर ...	३४
२५	आदमी पीछे चार२ कोस ...	३५
२६	व्यभिचारिणी स्त्री	३६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या	विषय	पृष्ठांक.
२७	मियाँकी शादी ...	३७
२८	उलटा चोर कोतवालको डाँटे	"
२९	पुत्र हुआ है ...	३८
३०	गवैये की गीत	३९
३१	गँवारकी पहुँच ..	"
३२	नौकरकी अक़ल...	४१
३३	बड़ा मसखरा	४३
३४	आजभी भूखों मारा	४५
३५	अफीमचीकी बात	४६
३६	हज्जाम	"
३७	बड़े अक्लमन्द ...	४७
३८	दौही सवाल ...	४८
३९	मैं न दूँगा.... ...	५२
४०	अफ़ीमची की नाक	"
४१	दमड़ी कौड़ी	५३
४२	वाहिद चश्म	५४
४३	बातकी करामात	"
४४	जी हुजूर....	६१
४५	सब खैरियतहै...	६२
४६	घमण्डी दोस्त ...	६५
४७	नाजमी	६६
४८	चौबेका नेवता	६७
४९	विद्यार्थीकी लीला	७४
५०	बीरबल	८१
५१	चालाक लड़का	८२
५२	सवालका जबाब...	८४
५३	अन्धी दौलत	८६
५४	दिल्लगी	८७
५५	माकूल जवाब	८८
५६	ईश्वरका ध्यान	८९
५७	कपड़ोंका आदर	९०
५८	मुँह तोड़ जवाब	९२
५९	गँजेडीकीबात	"
६०	लक्ष्मी और सूमकी बातें	९३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या	विषय	पृष्ठांक.
६१	बड़ी भूलकी ...	९५
६२	बुद्धिकी चातुर्य्यता	९६
६३	वकीली पेंच ...	९८
६४	कर देखिये ...	९९
६५	तरबूजकी चोरी	१००
६६	चोरकी शरजोरी	१०१
६७	जूतियोंकी बदौलत	१०२
६८	समझदार ...	१०३
६९	सम्पत्ति और विपत्ति	१०४
७०	बायाँ हाथ	१०५
७१	लीकै लीक	१०६
७२	सूमकी चोरी	१०७
७३	तीर्थमें स्नान	१०८
७४	पक्का चोर	१०९
७५	जैसीकरनी वैसी भरनी ...	१११
७६	अड़ियल नौकर....	११३
७७	ईश्वरकी ईश्वरता	११४
७८	दुष्ट प्रकृति ...	११५
७९	अफीमची साईस	११६
८०	कपूर चन्द	११७
८१	अँगूरकी चोरी	११८
८२	विलायती हिकमत	११९
८३	आदमीका गधा	१२०
८४	गधेका आदमी	१२२
८५	उद्योग और प्रारब्ध ...	१२४
८६	उचित न्याय ...	१२५
८७	मशाल अली ...	१२६
८८	घीखाने वाले ...	१२७
८९	दमड़ीकी हिकमत् टका बताई	१२८
९०	विना विचारका काम....	१३०
९१	पुरानी सज़ा	१३१
९२	नाईकी बातकी सफाई ..	१३२
९३	बहाना करना ...	१३३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) परिहासदर्प्पणकी–विषयानुक्रमणिका।

संख्या	विषय	पृष्ठांक.
९४	चोरको गँठकट्ट	१३४
९५	खूबकहा	”
९६	समझकी बात ...	१३५
९७	चौबेकी बात ...	१३६
९८	लालाजी और पुरोहित	१३७
९९	बेसुरी तान ...	१३८
१००	शागिर्दकी हिकमत ...	१३९
१०१	उधरहीसे होता आवे ...	१४०
१०२	बकुला भगत	१४१
१०३	ऊमरका हिसाब	१४२
१०४	खीर खाओगे ...	”
१०५	चाकरकी हुज्जत	१४३
१०६	उम्मेदवार	
१०७	अनुमानसे बताना	
१०८	गँवारकी बात	
१०९	मारवाड़ी अक्षरक दोष	
११०	हलवाईकी मिठाई ...	
१११	गेहूँका पेड़ ...	
११२	ज्ञानगुटिका	
११३	बीरबलका बेटा	
११४	जुझाऊ ...	
११५	अमृतकी वर्षा	
११६	औसतका अर्थ	

इति।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

परिहासदर्पण.

१—आशिकोंकी शैर.

[स्थान टेढ़ी बाज़ारका चौरास्ता]

(चन्द्रभान और राजेन्द्रबाबू हाथ मिलाये आरहे हैं.)

राजेन्द्र—मित्र ! ठहरना क्या ? चलो ऊपर [illegible] चलें.

चन्द्रभान—प्रियमित्र ! मुझसे एक पर एक [illegible] साहस नहीं होसक्ता क्योंकि मैं आजतक [illegible] ऐसे स्वर्गकी सीढ़ी पर नहीं चढ़ाहूं! इसलिये [illegible]ले आपही पधारें.

राजेन्द्र—चलिये ! मैंही पहले चलताहूं आप [illegible]रे पीछे २ चलेआवें मुझे किस्काडर है ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रभान-(मनमें) सचहै? तुम्हें डर काहेक "आगे नाथ न पीछे पगहा, जिनके मरे न रों गदहा" एक बूढ़ा बाबा है सोभी आज मरा कल्हमरा तुम्हें डर कैसा? बेहयाईकी टोक उठांही ली है (प्रगट) हां! हां! चलिये.

(दोनों आगे पीछे कोठेपर जातेहैं.)

बीबी जवाहिरजान-(बड़ी नम्रतासे खड़ी होकर) आइये! आइये! आदाब अर्ज है; आज मुद्द तके बाद आप लोगोंने क़दमरंजः फ़र्मा मुझे निहायत शर्फ़राज किया कहिये मिज़ाज शरीफ़!

दोनों बाबू-बन्दगी! बन्दगी!! सला- दोआये लतीफ़, मिज़ाजे शरीफ़!

राजेन्द्र-आपकी निगाहे गुलजारसे निहा बेजारहूं! क़िस्सःकोताह! यह मेरे मोहविव आप कमाल खुशी मुझसे सुनकर बेइख़्तियार या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाग़ गुलजारमें दाखि़ल हुये हैं उम्मैद पूरी है कि यह मुश्ताक़ बाग़ २ होकर यहांसे जायँगे.

जवाहिरजान—(राजेन्द्रसे) बड़ी फैज़बख्शी; बेशक इस फनमें आप खूब मश्शाके हैं ?

बिहिश्तअली—(सफरदा) किस फनमें ?

जवाहिरजान—किकुप्पनमें (सबहँसते हैं)

राजेन्द्र—भला हमारा तो यह पेशा है. पर आपको उस दिन की भी कुछ याद है ?

जवाहिरजान—जबकि तुम पैदा हुयेथे.

राजेन्द्र—नहीं ! जबकि "नथुनी उतार धरी-धरसे"

जवाहिरजान—क्या तुम्हारी अम्माजानने ? यही कहो !

राजेन्द्र—हुजूरने.

जवाहिरजान—बाहवे मज़दूर.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजेन्द्र—अच्छा यह सब जानेदो औरही कु
कहो.

जवाहिरजान—तुम्हीं फ़रमाओ.

राजेन्द्र—वोतो तुम्हारा कामहीहै मगर इश्क
मकतबमें आज बिस्मिल्लाहहै.

जवाहिरजान—खाकमें खाक गर होजाइये
तू ऐमरोज ! पर न मेरे पहलुये गुलजार
गुलपाइयेगा.

राजेन्द्र—अगर बख्शे जहे किश्मत बख
तो शिकायत क्या ?

जवाहिरजान—जो कुछहो पर यह सबरोज़
रोना धोना जानेदो आज आपके साथ ये न
बाबू साहब (मनमें उल्लूका पट्ठा) आयेहैं इन
तवाज़ह करना ज़रूरहै.

राजेन्द्र—हाँ! हाँ! कुछ ज़रूरही होना चाहिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विहिश्तअली–किबलेह! कुछ पान इला-
यची तो मँगाइये.

बूढ़ीढढ्ढी–(जवाहरजानकी नायिका) अरे-
मियाँ! कुछ शिरनीके वास्तेभी.

(राजेन्द्र मुँह ताकता रहजाताहै और चन्द्रभान
दो रुपये निकालके देताहै.)

बूढ़ीढढ्ढी–जनाब इस्में कै करम करूं?

जवाहिरजान–चुपरहो अभी नये पक्षी पर-
देशीहैं. पलते२ पलेंगे तो कहांतक न पर झारैंगे.

(सब हास्य करतेहैं.)

राजेन्द्र–तो अब ज्यादः देरका क्या कामहै!
समाजियोंको बुलाओ.

(खिलौना भांड़ आताहै.)

खिलौना--" महफ़िले वीरान जहां भाँड़ नवा-
शाद" आदाब २ बन्दगी,सलाम, पालागन, दण्ड,
वत, प्रणाम, नमस्ते! नमस्ते!! नमस्ते!!!

(सब हँसते हैं.)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खिलौना--(राजेन्द्रसे) आपने अभी किसे बुलानेके लिये बीबी नाज़ोअन्दाजसे कहाहै ?

राजेन्द्र--समाजियोंको.

खिलौना–" लाहौलबिला कूबत" इस जलसे खासमें समाजियोंका क्याकामहै? क्योंकि समाजी तो दोहीहैं--
" आर्य्यसमाजी" और " ब्रह्मसमाजी"

राजेन्द्र–जाओ सम्प्रदायीको बुलाओ.

खिलौना--"अलहमदुलिल्लाह" सम्प्रदायी तो गोकुलस्थ गोस्वामी कहलातेहैं क्या उनकी पध रही होगी ?

राजेन्द्र--अरेम्यां ! तुमतो जान खागये तबलची वग़ैरहको बुलाना चाहिये.

खिलौना–किबलहआलम ! तो सूधानाम सम्प्रदायी क्यों नहीं कहते ?

राजेन्द्र–जाओ ! जाओ !! करी कराई खा पकाई सफ़रकी दाई नामबाईकोबुलाओ.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रभान--(हँसकर खिलौनासे) आपका क्या नामहै ?

खिलौना--(उछलकर) गरीबखानः लखनऊ और नाम खिलौनाहै वाकईमें मैं अमीरोंका खिलौनाहूं । मेरीतो सिफत आपके वेदशास्त्रमेंभी खूबही गाई गई है "भण्ड पण्डितयोर्मध्ये वरं भण्डो न पण्डितः" अच्छा अब मैं रुख्सत होताहूं क्या मरज़ीहै ?

चन्द्रभान--(दोरुपये देताहै)

खिलौना--रहे लाखों बरस शाक़ी तेरा आबाद मैखानह ! (गया)

(सफरदायियों का प्रवेश और जवाहिरजानका नाजो अंदाजसे चन्द्रभान के रिझानेको मुखातिब होकर गाना ॥ सारंगी, तबला, जोड़ी.)

ग़ज़ल.

बगजें कत्ल गर शमशीरे अबरू वो उठाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी उम्मैद में हमभी यहां गर्दन झुकाते हैं। हज़ारों कत्ल होते हैं वहीं बसकूएजानामें। अदासे जब कभी खिड़कीका वो परदा हटातेहैं। हिना मलमलके हाथोंमें वो शोअलःरूलगा कहने। तमाशा देखलो हम आग पानीमें लगातेहैं ॥ जो देखा उसके बीमारोंको अपने हमसे यों बोला। हज़ारों नीमजां हम एक बोसेमें जिलातेहैं ॥ सुनाकर आशिकोंको फिर लगा कातिल वो यों कहने। कलेजा थामलो लोगो अदा हम आजमातेहैं ॥ बहुत मुश्किलहै अय बद्री नारायण इश्कका कूचा। जो सबदुनियासे जातेहैं वही इस राह आतेहैं.

सब—(एकस्वरसे) वाह ! वाह ! वल्लाह ॥ क्याकहनाहै, फिलहकीकत खूबही नईतजेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कमाल फ़र्माया. ! इस गाने और ज्ञान बतलानेकी सिफत हर्गिज बयान नहीं होसक्ती.

जवाहिरजान—(सबको आदाब करतीहै और मुजरा मौकूफ होताहै.)

राजेन्द्र—(हँसकर चन्द्रभानसे) क्योंयार ! कैसी मज़ाहै ?

चन्द्रभान—हाँ ! बेशक इस्की तारीफ नामिशाल औ कमालहै ! और इसवक्त दिल ऐसा बेताब होरहाहै कि मेरी ज़बानमें कुछ ताक़तही नहीं कि बयानकरूं.

राजेन्द्र—इस्की सिफत मैं क्या बयानकरूं इस्की मजा दिलही जानताहै देखो अभीतो नई नौचाहैं हालहीमें महाराजा..... ने हजार देकरतवायफ कियाथा. बस आज तुम्हीं कायम मुकाम महाराजाबनो ! बहुत खर्चभी नहींहै शिक्के सास्कतका मुआमलाहै ! बस गुलशने इश्ककी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हवा आप खाओ मैंभी चाँदनीचौक बाज़ारसे घूमघामके अभी आताहूं.

चन्द्रभान--अच्छा ग़नीमत समझताहूं.

राजेन्द्र--मेरे प्यारे रफीक रहाचाहतेहैं और मैं जाताहूं.

जवाहिरजान--हाँ हाँ आपरहैं सब आरामहै.

चन्द्रभान--बेहतर.

(राजेन्द्रका प्रस्थान)

२–हम और तुम.

हैं ! हमतो रातदिन भर २ के जेठकी दुपहरीमें कचहरी जातेहैं मरमरके कलमकी कमाई करके लातेहैं और तुम धनाशेठकी बेटी बनी पलहत्थी मारे मटकाया करतीहो कुछभी तुम्हें नहीं सिराता भला यह अनीति कबतक चलेगी.

हम दशबजेसे चारबजेतक साहब लोगोंकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिरछी बाँकी सुनते २ थकजातेहैं. काम करते २ साराशरीर बेकाम होजाताहै ! राहचलते दिनको दिनौधी होजातीहैं ! अपना पराया चीन्हा नहीं-जाता और तुम कोरी कल्लादराजी करके हाथ-फेंका करतीहो ! कहो तो कैसे बनेगा ?

हम दिन रात नौकरीके चक्कमें जुते रहतेहैं ! घर आकर थहरा बैठतेहैं ! हाथसे पानी ढालकर पीनेकी शक्ति नहींरहती. शौचजाकर आबदस्त करनेसेभी हाथकोरा जवाबदेताहै. और तू जैपुर-की रानी बनी पटिया सँवारा करतीहै ? कुछ इस अन्धाधुंधका ठिकानाहै ?

हम इसतरह मर जीके महीना पूरा करतेहैं. इकतीसवीं होतेही हमारे दफ्तरकी खूबी कि झट रुपया मिलजाताहै पाकिटभरे घर पहुँचताहूं तो तू इधर ऐसा अड़ंगा लगाती है कि तीनों त्रिलोक सूझजाताहै. सुनारको दो, दरजीकोदो,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुम्हार कोदो, हलवाई कोदो, बापरे, बाप॥ कहीं कड़ा बदलो, छूड़ाटूटा, घुनसीफूटी, बोरे-गिरे, नथ हल्कीहुई, कर्णफूल जड़ाऊ नहीं है, रामराम, सौ का सौ सब दूसरेही दिन फकसे पार होगया, हलवाई, कहार, नाई, धोबी, और नायन, अभी बाकी हैं. पर बाकी सुनके तो हमें जड़ैया आजाताहै, कामधन्धा कुछ नहीं आठोपहर तेल फुलेलसे तेरा जी नहीं भरता अबतक ब्याहीको इतना दिये होते तो वह कभी मुझे आँखोंसे ओट होने देती ?

तुम तो जरासी बातमें मुँहजरा, दाढ़ीजार कहके सात पुरखा तक समेट लेतीहो लेकिन हमारी ब्याही तरसती होंगी कि कब हमारे सैयाँ आवें और हमें गले लगावें ! और तूतो नजाने किधर २ किसपर दिल दौड़ाती होगी ! मगर इतना करनेपरभी हर महीने हमारे यह सौ तुम्हारे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नालमें होजातेहैं और तेरा "लाव लाव" नहींछूटता.

तुमको भी हमारी मुहब्बतका ख्याल रखना चाहिये. एक हाथसे ताली नहीं बजती दोनों-ओरसे मामला बनताहै यह कोई अच्छी बातनहीं है.

३—आँखोंके अन्धे नाम नयनसुख.

एक लाला साहब ऐसे नालायकथे कि अपने गृहकी भूषण सौंदर्य्यादि गुणयुक्त अपनी गृहणी के पास न रहकर सदैव वेश्याके घरपर सोया करतेथे जिससे उन्की वह पतिव्रता स्त्री अत्यंत दुखिया होगईथी. परन्तु दैवयोगसे श्राद्धके दिनोंमें लाला साहेबनेभी अपने पिताके श्राद्धके-दिन अनेक ब्राह्मणोंको निमन्त्रण दिया. उनमें एक सूरदास (अन्धा) ब्राह्मणभी आयाथा, लाला-साहबने सूरदासजीसे पूंछा कि कहिये सूरदा-सजी आपका नाम क्याहै ? तो सूरदासने कहा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि लालासाहेब मेरा नामहै " नयनसुख " तब लालाने कहा कि क्या खूब, जो आँखोंकेतो अन्धे और नाम " नयनसुख " यह सुनकर सूरदासने झट उत्तरदिया कि, क्याखूब ? जिस्का पतितो वेश्याके घर सोवे और उस्की स्त्रीका नाम " सुखिया " (लाला की घरवालीका नाम सुखियाथा) यह बात सुनकर लालासाहब बहुत खफा हुये और बिचारे सूरदासको बिना जिमायेही घरके बाहर निकालदिया. परन्तु सूरदासकी बात लालासाहबके हृदयमें ऐसी चुभगई कि उसीदिनसे वेश्याके यहां जानेकी कशम खाकर अपनेही घर सोनेलगे ! तब स्त्रीका नाम सार्थक होगया और उस सूरदासजीको एकदिन बुलायके बड़ी भक्तिके साथ भोजन करायके १००) रु० दक्षिणा दिये और अनेक प्रकारसे स्तुति करके सूरदासजीको बिदाकिया.

संग्रहकर्त्ता—वेश्यागामियोंको उचितहै कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कहानीसे कुछ शिक्षा ग्रहणकरें और वेश्या-विहारका त्यागनकरें.

४-बैंगनदास और जन्टलमैन-चौबेका वार्तालाप.

बैंगनदास-अरे ! ओचौबे तू इतना बड़ा कबसे सुधरा ? कोट बूट पटलूनपहिनेही लड्डू चढ़ाये जाताहै ?

जन्टलमैन चौबे-लड्डू खानेमें कोट बूट पट-लूनने क्या गुनाह किया ? कि इनके उतारनेकी ज़रूरतहो ?

बैंगनदास-बसकीजिये समझगये "अब देशका उद्धार ज़रूरहोगा".

५-अन्धे अधिकहैं या समाखे.

एकदिन अकबर बादशाहने बीरबल से प्रश्न किया कि बीरबल दुनिया में अन्धे अधिकहैं या समाखे? बीरबलने हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हूजूर विचार करके देखाजाय तो अन्धेही अधिक हैं. बादशाहने कहा कि यहबात बिल्कुल असम्भवहै. यदि तुमको ऐसाही भासहै तो साबित करके बताओ. बीरबलने कहा कि कल्हदिन इसबात को प्रत्यक्ष करके दिखलाऊंगा दूसरेदिन प्रातःकालही बीरबल एक खाट और कुछ मूंज लेकर बादशाह के पासगया और कहताहुआ कि हुजूरको अन्धे और समाखोंका निर्णय करना हो तो मेरे साथ चलिये. बादशाह झट बीरबल के साथ होलिया और बीरबल यमुनाजीके घाट पर जाके खाटको बुनने लगा और एक लेखक अन्धे और समाखो की फिहरिश्त लिखनेको बिठालिया. बादशाहने बीरबलको खाट बुनते देख कहा "अरे बीरबल यह क्या करने लगगया" बीरबलने लेखकसे इशारा (जो कि पहिलेहीसे समझा रक्खाथा) किया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि लिख अन्धों की फिहरिश्तमें बादशाहको. फिर थोड़ी देरमें बड़े २ शेठ, साहूकार, उमराव, बहादुर आने लगे और प्रायः सभी जने बीरबलको खाट बुनते देख कहतेहुये दीवानजी साहब! आज यह क्या करने लगगये! लेखकने इसप्रकार कहने-वालों का नाम अन्धों की फिहरिश्तमें लिखलिया इनमें पाँच दश जने ऐसेभी आये कि, जिन्होंने बीरबलको खाट बुनते देख कहा, दीवानजी साहब! आज आप खाट बुनने क्यों लगे? ऐसे बोलने वालोंका नाम सभाखों (आँखवालों) की फिहरिश्तमें लिखागया इसप्रकार घन्टे भरके बाद वह फिहरिश्त बादशाहको दिखाई बादशा-हने अन्धों की फिहरिश्तमें सबसे पहिले अपना-नाम देखकर बीरबलसे कहा कि, तुमने हमारा-नाम अन्धों की फिहरिश्तमें क्यों लिखवाया! और तिसपरभी सबसे पहिले हमाराहीनाम! बीर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बलने कहा ! कि हुजूर मैं प्रत्यक्ष आपके सम्मुख-खाट बुनने लगा और आपने अन्धों की तरह मुझसे यह प्रश्न किया "कि अरे बीरबल ! यह क्या करने लग गया" ? तब अन्धे नहीं तो क्या हैं इसी प्रकार जिन्होंने प्रश्न किया वे सब अन्धोंकी फिहरिश्तमें लिखेगये। और जिन्होंने ऐसा प्रश्न कियाकि "दिवानजी साहब ! आज आप खाट बुनने क्यों लगे ?" ता उनके नाम सम्माखों की फिहरिश्तमें लिखगये अब आप इस फिहरिश्तको देखकर विचारेंकि मेरा कहना सत्यहै वा झूठ बादशाहने प्रसन्न होकर बीरबलको बहुतसा इनाम दिया तत्पश्चात् अपने महलों में पधारे.

६—छुहारेकी गुठली.

एक राजा और मन्त्री दोनों छुहारे खातेथे पर राजा छुहारे की गुठलियाँ मन्त्रीके निकट फेंकता था। फिर राजाने खानेके पीछे मन्त्रीसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहा तू बड़ाखाऊहै क्योंकि छुहारेकी गुठली बहु-
तसी तेरे निकट पड़ीहैं मन्त्रीने उत्तर दिया कि
मैं ऐसा खानेहारा नहीं ! बल्कि हे कृपानिधान !
आपही बहुत खाऊहैं क्योंकि छुहारे तो खाये
गुठलियाँभी न छोड़ीं.

७–अन्धेके हाथ दीपक.

एक अन्धा अँधेरीरातमें दीपक हाथमें और
ठिलिया काँधेपर लियेहुये हाटमें चला जाताथा.
एक मनुष्यने उससे पूँछा ऐउल्लू ! तेरेलिये रात
और दिनतो बराबरहै दीपकसे तुझे क्यालाभ ?
यह बात सुनकर अन्धेने हँसकर कहा यह दीपक
मेरे लिये नहीं वरन् तेरे लिये है, क्योंकि तू
अँधेरी रातमें मेरी ठिलिया न तोड़े.

८–बादशाह जार्ज (३)

एकसमय बादशाहजार्ज (३) जहाजके आद-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मियों की कशरतका तमाशा देखरहेथे इन्में एक लड़काथा जो मश्तूल की रस्सियों पर इसतेजीके साथ चढ़ताथा कि सबलोग हक्केबक्के होजातेथे. बादशाह उस्के कर्तबसे निहायत खुशहुये. और लार्ड लोथियनसे बोले " लोथियन हमने तुम्हारी-तेजीकी बड़ीतारीफ सुनीहै देखेंतो सही तुम इसलड़केके पीछे दौड़सक्तेहो ! लौर्ड लोथियनने जवाबदिया "जहाँपनाह गुलामका काम हुजूरके पीछे दौड़ने काहै "

९—मेमसाहिबाकी झिड़की.

एकसाहेब और उन्की मेमसे नहीं पटतीथी एकरोज़ आया साहेबके पास आई और कहने लगी कि हुजूर रोज शुबहसे शामतक मेमसा-हिबा की झिड़की सुनते २ नाकों में दमआगया मैं मेम साहिबाको इत्तिला दिया चाहतीहूं कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुझसे अब न निबहेगी.अपना कोई दूसरा इन्त-जाम करले. साहेब बोले" आया तू बड़ी खुश-नशीबहै, मैं चाहताहूं कि मैंभी तेरी तरहइत्तिला-देसकता".

१०—बदमाशकी बात.

एक बदमाश जो कईबार क़ैद होचुकाथा फिर किसी जुर्म में गिरफ्तार होकर फरासीस के एक मजिस्ट्रेटके सामने हाज़िरआया मजिस्ट्रेट ने. लानतीके तौरपर कहा" बड़ी शर्म की बातहै कि तुम्हें फिर अपनी हर्कतों की बदौलत अदालतमें आनापड़ा अब तुम्हारी इसीमें बेह-तरीहै कि बुरी सुहबतमें वक्त खराब करने के बदले मिहनतकी आदतडालो, मुजरिम बोला "बुरीसुहबत ! भला आप ऐसा फर्मातेहैं" जबकि आप जानते हैं कि मेरा बहुत ज़ियादावक्त पुलिश और मजिस्ट्रेटों के दर्मियान सर्फ़ होताहै !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

११-देर असर ज़हर.

किसीने फरासीस के एक आलमसे कहा कि कहवाभी एक तरहका देर अशर जहरहै! आलमने जवाबदिया "आप सच कहतेहैं यह बहुतही देर अशर जहरहै क्योंकि इसे सत्तरवर्षतक इश्तेमाल करनेपरभी मैं आजतक नहीं मराहूं.

१२-चौबेकी बूटी.

एक चौबेजीकी बान थी कि जब बूटी छानते पहले शिवजीपर चढ़ा पीछे आप पीते! शिवालय उनके घरसे कुछ दूरीपर था। एक दिन भंगकी तरंगमें यह उमंग आई कि हमको शिवालयपर जानेमें बड़ा कष्ट होताहै इससे महादेवजीको यहीं उठालावें! यह ठान शिवालय पर जा एक गोल पिन्डी नर्मदाकी उठाली और लेचले पुजारीने पूँछा कि चौबेजी यह क्या करते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो? चौबेने उत्तर दिया कि यहाँ तो यह थोड़ी भंग पीते हैं मैं इन्हींसे भंग रगड़ा करूंगा जिस्में यह मनमानी भंग पिया करेंगे.

१३–मिती पूजनेको बाक़ी है.

जाड़ेके दिनोंमें एक खुशमिज़ाज किसी महाजनके यहां एक हुन्डीके दाम लेनेगये महाजनने कहां अभी इस्की मिती पूजनेको बहुत दिन बाक़ी हैं आप बोले बहुत दिन बाकी हैं यह हमभी जानते हैं मगर जाड़ेका मोशिम है दिन बहुत जल्दी बीत जायगा इससे अभीसे इस्की फिक्र कीजिये.

१४–सुँघनीसे नुक्सान।

एक भले आदमीने किसी हक़ीमसे पूँछा कि सुँघनीसे दिमाग़ का कुछ नुक्सानतो नहींहोता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हकीमने जवाबदिया हरगिज़नहीं ! क्योंकि जिनको कुछभी दिमाग़है वे सुँघनी सूँघतेही नहीं.

१५—परदेशी मियाँसाहब.

एक मियाँसाहब परदेशमें शरिस्तेदारीपर नौकरथे कुछदिन पीछे घरका एक नौकर आया और कहा कि मियाँसाहब ! आपकी जोरू राँड़ होगई. मियाँसाहबने सुनतेही शिरपीटा रोये गाये बिछौनेसे अलगबैठे शोकमाना. लोगभी मातमपुरशीको आये उनमें उनके चार पाँच मित्रोंने पूंछा कि मियाँसाहब आप बुद्धिमान् होकर ऐसीबात अपने मुँहसे निकालतेहैं ! भला आपके जीते आपकी जोरू कैसे राँड़होगी? मियाँसाहबने उत्तर दिया भाई ! बाततो सचहै खुदाने हमेंभी अक़लदीहै मैंभी समझताहूं कि मेरे जीते मेरी जोरू कैसे राँड़होगी पर नौकर पुरानाहै झूठ कभी नबोलेगा यह सुनकर सबकोई हँसपड़े.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१६–व्यापारियोंका घोड़ा.

कईएक व्यापारियोंने एक राजाके यहां अपने २ घोड़ा दिखाये और राजानेभी देखतेही प्रसन्नतापूर्वक बहुत घोड़ोंको मोललेलिया और दोलाख रुपया मोलसे अधिक देकर कहा कि अपने २ देशसे फिर मेरे लिये अश्व अर्थात् घोड़ा लाइयो. व्यापारियोंकी बिदाईके पीछे एकदिन राजाने आनन्दकी अवस्थामें मन्त्रीसे कहा कि सारे उल्लुओंका नाम लिखो. मन्त्रीने निवेदन किया कि हेजगताश्रय! मैं आपकी आज्ञाके पहिलेही लिखचुकाहूं और सब नामके आगे आपका नामहै यह सुनकर राजाने पूंछा तूने ऐसा क्यों किया? मन्त्रीने उत्तरदिया कि आपने व्यापारियों को बिना जाने बूझे दोलाख रुपये देदिये और उनका बिचवैयाभी नहीं लिया यही चिह्न उल्लूपट्ठाकाहै राजाने कहा यदि व्यापारी घोड़े लेकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आवें तो क्याहो ? मन्त्रीने कहा यदि वे घोड़े लेकर फिर आवें तो आपका नाम उल्लूकी वहीसे छीलकर व्यापारियोंका नाम भरती करूंगा.

१७–परछाईंसे डरेहो.

एक मरीज़ने अपने डाक्टरसे आकर बयान किया कि कल रातको जब कि मैं शराबखा-नेसे लौटकर घर आताथा. एक शैताननने मेरा पीछाकिया. डाक्टरने पूंछा कि उस्की शक्ल कैसीथी ? इसने जवाबदिया कि गधेकीसी । डाक्टरबोले डरोमत बेफिक्ररहो मालूम होताहै कि तुम रातको नशेमेंथे और अपनी परछाईंसे डरेहो.

१८–वकील की अक़ल.

अमेरिकाका एक वकील एक छोटेसे लड़केके मुकद्दमेंमें बहश कररहाथा और बहशकी हालतमें बच्चेको रोता हुआ गोदमें उठाकर जूरीको दिख-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाया ! जिस्में वह उस पर तर्सखाय. इस्का जूरीपर बड़ा असरहुआ. तरफ़शानीके वकीलने यह कैफियत देख लड़केको चूमकार पूंछा कि "क्यों रोतेहो ?" लड़केने जवाबदिया "यह हमको चुटकी काटरहाहै" यह सुनकर सब लोग हँस-पड़े और वकील साहबकी उस्तादी खुलगई.

१९—बादशाहसे बातकी.

एक छोटा आदमी इसबातको बड़ी शेख़ीके साथ बयान कररहाथा कि मुझसे खुद बादशाहने बातकी किसीने पूंछा कि बादशाह तुमसे क्याकहा ? उसने जवाब दिया कि बादशाहने मुझसे फर्माया कि "राहसे हटकर खड़ाहो"

२०—गालीकी पहुँच.

एक हिन्दू सूर्य्यको जलदेताथा उससमय
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
एक अहिन्दूने आकर कहा कि क्या तुम्हारा जल

सूर्य्यको पहुँचताहै ? देखो उसीजगह गिरगया यह सुनकर हिन्दूने कहा "मरसरवा" अहिन्दूने कहा अरे उल्लू गालीदेताहै ? उसने कहा आपकी बहन कहां ? हम कहां गाली क्यों पहुँची ? अगर गाली पहुँची तो बेशक हमारा जल सूर्य्यको पहुँचा. यह सुनकर बिचारे अहिन्दू लज्जित होकर चलदिये. और उसदिनसे ऐसी बातें कहनाहीं छोड़दिया.

२१-घड़ीमें क्याबजाहै.

एक मुख्तार साहब कचहरी जानेके समय झटपट कपड़ा पहिनकर अपने नौकरसे बोले कि "दौड़के देखतो आरे, घड़ीमें क्या बजाहै" नौकर बोला कि हुजूर छः। मुख्तारने कहा अबे ! जाके देखेगा कि यहींसे ? नौकर बोला हुजूर मैं सबेरेही जाकर देख आया था ठीक छःबजाथा बेर: बेर दौड़नेसे क्या घड़ीभी बदल जायगी.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२२-उल्लू बसन्त.

किसी नगरमें एक पुरुष रहताथा उस्की समझ सबसे निरालीही रहतीथी, उस विचारेको उल्लू समझकर लोग रात दिन उससे ठट्ठाही किया करतेथे यदि कोई उससे कहता कि देख २ कौआ तेरा कान लेगया तो वह विचारा घबराकर उस कौवेकी ओर दौड़ता और यह न शोचता कि पहले अपने कानको टटोलूँ जब कभी उसे थाली ढूँढ़नीहोती तोभी लोटा, लुटिया, गगरी, डिबिया तकमें हाथ डालकर खोज डालता यदि कोई उससे कहता कि आज तेरी आँखे फूटगई हैं तो विचारा घबराया हुआ जबतक अपनी आँख दर्पणमें नहीं देखले तबतक वह चैननहीं पाताथा. उस उल्लूबसन्तको यह समझनथी कि मेरी आँख ही फूटगई होती तो मैं देख कैसे सक्ता! उस्के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घरमें एक विधवा माँथी. दूसरी उस्की बहूथी और तीसरा वह आपथा पर वह अपने उल्लूप-नेसे सबोंको कष्टही देताथा.

एकदिन वह बाहर गयाथा तो किसी लड़केने उससे विचित्र ठट्ठाकिया वह यह कि उसे देखते आँखमें आँसू भरके कहने लगा कि हाय ! हाय!! बड़ा अनर्थहुआ ईश्वर करे ऐसा दुःख वैरी कोभी नहो. जैसा तुम्हारे घर पड़ाहै. उल्लू घबराकर बोला " ऐं ! ऐं ! क्या २ ? हमारेघर ! हमारेघर!! " उसने कहा " हाँ तुम्हें नहीं मालूम " उल्लू " नहींतो " तब वह चमकके बोलाकि " अरेरे तुम्हारी स्त्री आज विधवा होगई ! " यह सुनते-हीतो उल्लू बसन्तका आधा साँस नीचे और आधा ऊपर रहगया ठट्ठा करनेवालेकी आँखकी चितौनी पा औरभी कितनेही रास्ते चलते उस उल्लूके चारों ओर खड़े होगये और कहने-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगे कि "हाय! हाय!! कैसा अनर्थ हुआ!!" अभी उस विचारीकी के वर्षकी अवस्थाथी. उसने क्या२सुखभोगा?हा!उस्के भाग्यमें यहीथा?यह सुन वह और घबराया और झट छातीपीटता आँसुओंमें लहफह होता घरकी ओर भागा! दूरहीसे उस्की माँने उस्के रोनेका कोलाहल सुना! इतनेमेंतो वह आही पहुँचा और चौकहीमें गिरपड़ा और छाती पीटके लगारोने उस्की माँ कितनीही समझाहारी पर यहाँ कौन सुनताहै! जब बड़ीदेर होचुकी उस्की माँ धैर्यधराकर पूंछनेलगी कि "रे कहतो सही क्याहुआ?" "क्यों रोताहै" वह बोला कि तुझे अभीतक नहींमालूमहै.?सुनैगी तो तूभी पुक्काफाड़के रोवैगी. वह कुछ घबरा कर बोली"भलाकहतो सही!" उल्लू बोला "कहूं क्या? मेरी बहू विधवाहोगई" और साथही फिर रोनेलगा उस्की माँ समझगई कि किसीने ठट्ठाकियाहै

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ मुसुकुराके बोली "अरे मूर्ख तुम्हें इतनी समझनहीं ! भला तैंतो जीताहीहै तब तेरी बहू कैसे विधवा होगई?" उल्लूभी लाल२आँखें करके बोला यह आईहै मुझे समझाने?-बतलातो-मैंतो जीताहीहूं तू कैसे विधवाभई? जैसे तू भई तैसे वहभी हुई? यह सुन बिचारी बुढ़िया माँ लजाकर और उस्की मूर्खतापर हँस चुप रहगई। उल्लू बसन्त फिर चिल्ला २ के रोनेलगा.

२३-डरपोंक बंगाली.

एक बिचारे डरपोंक बंगालीको किसी छोटेसे जंगलमें होकरजानापड़ा.क्याकरे बिचारा मनही-मन धुकुड पुकुड़ करता और चौकन्नाहो इधर उधर निहारता चला. वह पत्ते खड़कने परभी चकपका उठता और खरगोशके देखनेसेभीचिल्ला भागता किसी कदर लटपटाताहुआ चलाही जाता था कि सामनेसे आता एक सिपाही देखपड़ा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बस उस्की कानतक घूमी हुई दाढ़ी,बत्ती बटकर कसीहुई तिरछी पाग, पीठपर पड़ी ढाल और हाथ में बन्दूक देखतेही तो बंगाली बाबूके प्राण सूखगये. शरीरका खून पानीहोगया. चिल्लाकर आँखफाड़ दांत निकाल प्रदर्शनी के खिलौनेकी तरह खड़े होगये. फिर होशमें आ दूसरीराहसे चलनेलगे दैवात् उस सिपाहीकोभी उसीरास्ते जानाथा इसलिये सिपाही भी घूमा. तबतो बंगाली बाबू अपने जीनेकी आशा छोड़ धीरे २ चलनेलगे । कुछदेर साथ चलनेसे बंगाली के पेटमें बिल्ली लड़तीथी. इसीबीच सिपाहीने पूंछा बाबू तुम कहाँ जाओगे ? खैर,किसीतरह जीभ ऐंठ दाँतदबा गोलमालकी बोलीसे बाबूने जवाबदिया कि दमभर ठहरकर बंगालीने पूंछाकि "बाबू आपनारनामठोक्याहै" सिपाहीने कहा "हाथी-सिंह" बस अब बंगाली बाबूकी घबराहटका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ठिकानानहीं; मनमें समझा कि जंगलोंमें हाथी और सिंह मिलाकरतेहैं सो यहीहै। इसने हमें अभी चीन्हा नहीं है. आदमी समझेगा तो एकदम खाजायगा. इतनेहीमें तो सिपाहीनेभी पूँछा कि "बाबू आपका नाम क्याहै" धूर्त्तबाबू विचारा कि यदि सच्चा नाम बोला तो यह खाजायगा. इसलिये अपना नाम कुछ बढ़चढ़के बताना चाहिये इसलिये कहने लगा. कि " अमारा नाम पूछता! अमारा! अमारा नाम सौबाघ, सौ सिंह पचाशभालू घडाभर बिच्छू, सौ बैरं और एकबकससाँप" यह सुनकरके वह सिपाहीभी मनहींमन हँसने लगा.

२४—बहिरा नौकर.

एक बाबू साहबने एक नौकर रक्खा परन्तु इनकी अभाग्यतासे नौकर बहिरामिला. किसी-दिन दैवयोग बाबूसाहब के यहाँ पूजाथी सो ठाकुरजीको झन्डा चढ़ाना आवश्यकथा. बाबूने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.

उस नौकरको बुलाके कहाकि "देखो ठाकुरजीकी पूजाहै सो पताका चाहिये" उसने कान सामने कर भौंह सिकोड़ आँखें मिचमिचाकर कहा "ऐं!क्या चाहिये?" बाबूने कहा "पताका–पताका" वह बोला "क्या पटाका!" इसने हाथ ऊँचाकर बतलाया "फरहरा–फरहरा" वह फिर आधा मुँह फाड़के बोला "क्या धरहरा!" तब बाबू तमकर ज़ोरसे चिल्लाके बोले "धाजा–धाजा" वह शिर हिलाकर बोला "हाँ! हाँ!! समझगये खाजा" तब तो बाबू शिरसे पैरतक भभूकाहोकर बोले "अबे पाजी झन्डा झन्डा" वह बोला "हाँ हन्डा" अच्छा लाताहूं विचारे बाबू शिर ठोंकके रहगये। पर वह बहिरा न समझा.

२५–आदमी पीछे चार २ कोश।

चार जने बनारससे बिन्ध्यवासिनी को चले एकने कहा कि "भाई यहाँसे सोलह कोशहै भारी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सफरहै थक जाँयगे,, दूसरा अपनेको कुछ गणितमें लगाताथा वह झटपट बोलउठा कि " ओः चिन्ता मतकीजिये सोलहकोशहै तो चलनेवालेभी चार हैं. बस आदमी पीछे चार २ कोश पड़ा कौन बड़ी बात है?

२६—व्यभिचारिणी स्त्री.

एक व्यभिचारिणी स्त्री अपने पतिको तिलाञ्जलि देकर एक रसिकपुरुषके साथ उड़गइ. पतिने स्त्रीके लेजानेकी नालिश रसिकराजके ऊपर राज्य दरबारमें किया। परन्तु सुबूत न होनेके कारण मुक़द्दमा डिसमिस होगया और जब मुद्दई मुद्दआअलेह अदालतसे जानेलगे तो हँसोड़ न्यायाधीशने कहा " बेल ! औरट !! अब तुम इन डोनोंमेंसे किसके साथ जायगा ? "हाजिरजवाब औरत क्या कहतीहै " हुजूर माँ बापहैं जिस्के साथ करदें उसीके साथ जाऊँ.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२७—मियाँकी शादी.

एक मियाँकी शादी बुढ़ापेमें हुई बीबी सुन्दरथीं. और मियाँ उसे बहुत प्यार करतेथे और बहुधा कहा करतेथे कि मैं तुझे शादी होनेके पहलेभी ख्वाबमें प्यार किया करताथा। परन्तु बीबी लज्जासे कुछ न कहतीथीं। दो महीने पीछे बीबीके लड़का पैदा हुआ। मियाँने बीबीसे पूँछा कि अभीतो शादी हुये थोड़ाही अर्शाहुआ इतनेहीमें यह गजब क्या? बीबीने हँसकर जवाबदिया वाह! अभीसे आप भूलगये, आपहीतो कहा करतेथे कि मैं शादी के पहलेहीसे तुमको प्यार किया करताथा और फिर आप पूछतेहैं कि यहक्या?

२८—उलटा चोर कोतवालको डाँटे.

एकमनुष्य किसी हलवाईकी दूकान पर गया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और उस्की मिठाईकी ओर ध्यानसे देखनेलगा थोड़ी देर पीछे हलवाईसे पूँछा भैयाजी ! यह कौनसी मिठाई है ? उसने कहा खाजा. यह सुन-तेही वह उस्की सारी थालकी मिठाई खागया। और लगा उसको डाँटने कि मुझको मेरी मिह-नतदे अन्तको उसे धमकाकर एक रूपया नक़द लेकर चलताहुआ.

२९-पुत्रहुआहै.

एक आदमी लड़के समेत अपने घरसे दूर किसी दूसरे नगरमें नौकर होकर गया एकदिन घरसे लड़केके नाम पत्र आया कि तुम्हारे लड़का पैदा हुआहे। पत्र पढ़कर इसे बड़ी चिन्ताहुई कि मुझे घर छोड़े आज डेढवर्षहुये यह लड़का होना कैसा ? इसी शोचमें बापसे कहा कि घरसे पत्र आयाहै उस्में मेरे लड़का पैदा होनेका हाल लिखाहै भला यहभी कभी होसकाहै कि हम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोवर्षसे घर नगये और वहाँ लड़का पैदा होजाय? बापने जवाब दिया, बेटा! इसमें शोच-फ़िक्र का क्या काम? जब तुम पैदा हुये थे तबतो मैं बारहवर्ष घरही नगयाथा.

३०—गवैये का गात.

एक गवैयेने किसी धनाढ्यके पास जाकर गा बजाकर उसे बहुत खुशकिया। धनाढ्यने सुनकर दो तीनबार दाढ़ीपर हाथ फेरा पर एकभी बाल हाथमें नहीं आया इससे जानागया कि अभी तुम्हारी किस्मतमें कुछ नहीं है। गवैयाभी पूरा मशखराथा जवाबदिया माफकीजिये साहब! दाढीहो आपकी और हाथहो गुलामका फिर देखें कि मेरी भाग्यमें क्यों कुछ नहींहै.

३१—गँवारकी पहुँच.

एक गँवारने किसी हकीमसे जुलाब माँगा उसने खिचड़ी खानेको बतलाया परन्तु वह विचारा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गँवार आदमी ऐसा नाम कभी नहीं सुनाथा इस-
लिये खिचड़ी खिचड़ी कहता हुआ घरचला
रास्तेमें खिचड़ी भूलकर खाचिड़ि खाचिड़ि
कहता चला एक किशान अपने खेतमें चिड़ियाँ
उड़ा रहाथा जब यह खाचिड़ि २ कहता हुआ
उधरसे निकला किशानने उसे ऐसा कहनेसे रोंका
जब वह नमाना तो उसे खूबपीटा तब तो इस्को
आपही पूँछना पड़ा कि क्या कहूं! किशानने कहा
कि कहो "उड़ते जाओ! उड़ते जाओ!!" वह वि-
चारा यही कहता हुआ चला थोड़ी दूरगयाथा कि
आगे एक शिकारी जाल लगाये बैठाथा इस्कोभी
गुस्सा आगया इसे ठोंक पीटकर कहा कि अबसे
यह कह "आते जावो फँसते जाओ" यह वही
कहता हुआ आगे बढ़ा आगे देखा कि चोर सेंध
लगारहे हैं उन्होंनेभी इस्की खूबही खबरली और
कहा अबसे ऐसा कहना "लेते जाओ रख २ आवो"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब वह यही कहताचला आगे जाकर उसे एक जलाजा मिली! उनसे भला यहबातकैसे सुनी जास-कीथी इनकी खूबही धुनकुटिआकी और कहा अबसे कहना कि "ईश्वर यह दिन किसीओ नदि-खावे" गँवार अब यही कहता आगे बढ़ा, उधरसे कोई बरात आतीथी लोगोंने इसे यह दुर्वाक्य बकते सुन खूबहीठोंक पीटकी जिससे वह विचारा बेहोश होगया जब होशमें आया तो उन्होंने कहा जा अबसे ऐसा कहना कि" भगवान यह दिन सबको दिखावे" गँवारने सोचा कि इस चीज़के नाम लेनेसेतो यह हाल हुआ खानेसे नजाने क्या होगा? इसलिये उस्का ख्याल छोड़ घरकी राहली.

३२—नौकर की अक़ल.

किसी अमीरका घर सड़कके ऊपरहीथा! नौकरसे कहा आज घर खूब साफ करना लेकिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कूड़ा कचड़ा ज़रा भले आदमीको देखकर फेंकना. इस बेवकूफने सब कूड़ा टोकरेमें भरकर कोठेपर आकर विचार किया कि मालिकका हुक्महै भले आदमीको देखकर फेंकना । सो इसी शोच विचारमें भले आदमीकी रास्ता देखने लगा. जब एक आदमी दुशालाओढ़े उधरसे निकला इसने देखतेही सब टोकरा उन्हींके शिर-पर औंधादिया वह विचारा शरमिन्दा होकर गुस्सेसे उस्की ओर देखने लगा । नौकरने झट जवाब दिया " वाहजी । वाह धोबीसे तो जीते नहीं गधेके कान मरोड़तेहो " मैं क्याकरूं मेरे मालिकका हुक्महीं यहहै. यह सुन उसने कहा भला बुला तो अपने मालिकको देखौं तो कैसा मालिकहै । जो भले आदमियोंपर कूड़ा फेंकवा-ताहै । नौकरने चट जाकर मालिकसे कहा साहब जरा यहां आओ कोई तुम्हें बुलावतहै. उसने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो आकर यह हाल देखा दंग होगया। और जान लिया इसी बेवकूफका यह कामहै उस भले आदमीसे मुआफी मांगी और नौकर को बहुत डाँटनेलगा.

३३—बड़ा मसखरा.

एक बुंदेलखण्डी मुसाफ़िर एक गाँव में पहुँचा वहाँ उससे एक मसखरेसे भेट होगई, मुसाफिरने सोचा कि इस गाँवके मालगुज़ारसे मुलाक़ात करना चाहिये ऐसा सोच उसने उस आदमीसे पूँछा क्यों भाई! इस गांवका ठेकेदार कौन है मसखरा बोला यहां ठेकेदार बहुत हैं, कोई ठेका रखाये हैं, कोई दाढ़ी रखायेहैं, कोई पख रखायेहैं, ऐसे २ बहुतहैं आप किसको पूँछते हो? मुसाफिर बोला भाई हम यह नहीं पूँछते—हम यह पूँछते हैं कि इस गाँवका अमली कौन है? मसखरा बोला जनाब तुम्हारे तो अजीब सवाल होते हैं. अरे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाई यहां ः
कोई गांजा
शराबका ए
किसको ब
फहो, झो
मसरु
गिय

-अफीमचीकी बात.

...दो अफीमची अड्डेपर बैठे गप्प ...में एक बोला भाई मेरे नाना जानकी ...घुड़शालथी कि एक रोज वे मुझे ...बैठाल घुमाने लेचले! घूमते २ पच्चीसवर्ष ...गिये पर उस घुडशालका पता नहीं मिला इसपर दूसरा अफीमची बोला भाई हमारे नानाजानके पास एक इतना बडा लम्बा बांसथा कि जब पानी बरसानेकी जरूरत होती तो उस बांससे बादलमें छेदकर दियेजातेथे. इसपर पहिला अफीमची बोला अबे ! तू झूठाहै. भला इतना लंबा बांस रक्खा कहां जाताहोगा ? दूसरा बोला तुम्हारे नानाजानकी घुड़शालमें यह सुनकर पहिला अफीमची बहुत शर्मिन्दा हुआ.

३६—हज्जाम.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक नाई किसीके बाल काट रहाथा जिसका बाल

३४–आज भी भूखों मारे शिरमें

एक पण्डितजीने एक जाटको रों कहा साहब
रक्खा पण्डितजी रोज खूब हलुआये जाते हैं।
और नौकर को सिर्फ तीन पाव आ.
ऐसा करते पण्डितजीको बहुत दिन हुमानने
रोज, जाटने किसीतरह अपनी बाटी पण्डिखाना
चौकामें डालदी, यह देख पण्डितजी बोले अरे
दुष्ट तूने मेरी रसोई बिगाड़दी, रेआजकी रसोई
तूही लेजा. नौकर बनी बनाई रोटी मजेदार
खाकर मग्न हुआ दूसरे दिन फिर जब पण्डितजी
अच्छे २ भोजन पका थालीमें परोसे खानेको
बैठेथे कि यह झटपट चौकेमें जा पण्डितजीके
पैर पकड़ गिड़गिड़ाकर कहने लगा महाराज
मेरा कलका कुशूर माफ़करदीजे मेरे सबबसे कल
आपको भूखों मरने पड़ा यह सुन पण्डितजी
खिसियाकर बोले अरे दुष्ट! तूने आज भी तो
भूखों मारा.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाई यहां अमली व

कोई गांजाका अ मिचीकी बात.

शराबका ऐसे शि अफीमची अड्डेपर बैठे गप्प किसको वतमें एक बोला भाई मेरे नाना जानकी फहो, हमें घुड़शालथी कि एक रोज वे मुझे मसल बैठाल घुमाने लेचले! घूमते २ पच्चिसवर्ष किस य पर उस घुडशालका पता नहीं मिला इसपर दूसरा अफीमची बोला भाई हमारे नानाजानके पास एक इतना बडा लम्बा बांसथा कि जब पानी बरसानेकी जरूरत होती तो उस बांससे बादलमें छेदकर दियेजातेथे. इसपर पहिला अफीमची बोला अबे! तू झूठाहै. भला इतना लंबा बांस रक्खा कहां जाताहोगा ? दूसरा बोला तुम्हारे नानाजानकी घुड़शालमें यह सुनकर पहिला अफीमची बहुत शर्मिन्दा हुआ.

३६–हज्जाम.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक नाई किसीके बाल काट रहाथा जिसका बाल

काटताथा उसने नाईसे पूँछा कहो हमारे शिरमें कितने बालहोंगे ? नाईने मशखरेपनसे कहा साहब जो कुछ होंगे सो सब सामनेही तो आये जाते हैं।

३७—बड़े अक़लमन्द.

एक वक़्त एक धनवान् पढ़े लिखे मुसल्माननें बहुतसे आदमियोंकी दावतकी जब सबको खाना खिला पिला चुका तब बोला साहिबान मजलिश! मैं बड़ा शुक्रगुज़ार हुआ कि आपलोग मेरे ग़रीब ख़ानेपर तशरीफ़ लाये और जो कुछ मुझ कमतरीनने आपके रूपरू रक्खा उसे आप लोगोंने तनादल फ़रमाया, इनके घर जो लोग खाना खाने आये थे उनमें एक बड़ा बेवकूफथा यह उनकी आजजीकी बातें सुन बड़ा अजम्भामें हुआ और अपने मनमें सोचने लगा देखो इस्का इतना बड़ा तो घरहै पर यह उसे ग़रीबखाना कहताहै और हमने कितना उम्दा खाना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खिलाया जिसे कहता है कि जो कुछ मुझसे जुरा सो हाजिर किया इससे मालूम होताहै कि जितनी छुटाईसे बात कीजावे उतनीही बड़ी अक़्लमन्दी समझी जातीहै. एकरोज़ आपनेभी सबका न्योता किया जब सबलोग खानाखापी- चुके तब सबके साम्ने आकर बोला "साहबान मजलिश आपलोग मेहरबानी करके मेरे पाखाने पर तशरीफ़ लाये कमाल अहसान किया और जो कुछ मैंने गूँ गोबरकीगुरी आपके सामने रक्खी उसे आपने खाया.

३८–दोही सवाल.

चार यार परदेश निकले एक रोज़ चलते २ इन्हें प्यास लगी और रस्तेमें कहीं पानी नहीं मिलताथा इतिफ़ाकन एक गाँवके किनारे एक दरख्त की सायेमें जा बैठे इतनेमें कुछ फासलेपर कुछ औरतें एक कुयें पर पानी भरती दिखलाई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पड़ी। इसपर एक बोला मुझसे तो अब प्यास साधी नहीं जाती सो मैंतो कुयें पर जा पानी माँग पीऊंगा ऐसा कह चल खड़ाहुआ और कुयें पर जाकर एक औरतसे कहा बाई२मुझे पानी पिलादे यह सुन उस औरतने पूँछा आप कौनहैं ? उसने कहा मैं मुसाफिरहूं. औरतने कहा मुसाफिरतो दुनियाँमें दोहैं आप तीसरे कौन ? इसका जवाब दोतो पानी पिलाऊं यहसुन आप लौटे और अपने साथियोंसे सब हाल कह सुनाया. इसपर दूसरा बोला मैं जाताहूं यह कह चलदिया और जाकर उसी औरतसे कहा बाई २ मुझे पानी पिलादे. उसने पूँछा आप कौनहैं ? उसने कहा मैं गुण्डाहूँ. यह सुन उस औरतने कहा गुण्डातो दुनियाँमें दोहैं आप तीसरेकौन ? इसपर आपकोभी जवाब नआया और लौटकर अपने साथियोंसे कहा यह हाल सुन तीसरा उठा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और कुयेंपर जाकर कहा बाई २ मुझे पानी पिलादे. उसने पूंछा आप कौनहैं ? उसने कहा हम ग़रीब हैं. उस औरतने कहा ग़रीब तो दुनियाँ में दोहैं आप तीसरे कौन ? यह सुन आपभी अपनासा मुँहले लौटे यह माजरा सुन चौथाभी चला और जाकर कहा बाई २ मुझे पानी पिलादे. उसने कहा तुम कौनहो ? इसने कहा हमलुच्चेहैं. यह सुन औरतने कहा लुच्चेतो दुनियाँमें दोहैं आप तीसरेकौन ? इस्का जवाब दो तो पानी पिलाऊँ. इनसेभी कुछ जवाब न बनपड़ा आपभी लौटआये इतनेमें उस औरतने शिरपर घड़ाधर घरकी राहली और घरमें घड़ारख एक लोटेमें पानीभर और दानम चारलड्डूरख आँचलसे ढाँक लेचली और जाकर जहाँ चारों आदमी ठहरेथे पहुँची और चारोंको एक २ लड्डू खिला पानी पिलारहीथी कि ये सब माजरा इस्का देख किसीने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Library
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3268

उस्के घरवालेके पास जाकरके कहा कि तुम्हारी औरतको चार आदमी भगाये लिये जातेहैं वह सुनतेही राजाके पास दौड़ाहुआ गया और सब हाल कहा राजाने दश पन्द्रह आदमी भेज इन्हें उस औरतके साथ दरबारमें पकड़ बुलवाया और सब हाल पूँछा उन्होंने सब जैसेका तैसे कह सुनाया सब बातें सुन राजाने उस औरतसे दोनों सवा-लोंके मॉने पूँछा औरतने कहा हुजूर मुसाफिर दो एक सूरज दूसरा चाँद. गुण्डे दो एक अन्न दूसरा जल. गरीबदो एक लड़की दूसरी गाय और लुच्चे दो अगर मेरी जान बख़्शीजाय तो बतलाऊं राजाने कहा अच्छा कहो औरतने कहा एक लुच्चातो मेरा खामिन्द है जो बिनासमझे आपसे रिपोर्टकी और दूसरे लुच्चा आपहैं जो मुझसी पतिव्रतास्त्री को कचहरीमें बुला खुलाखुली इज-हार लेतेहैं मैंने कुयेंपर पानी इनको इससबबसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं पिलाया कि एकतो यह भूखेथे और दूसरे धूपकेमारे चले आये इससे मैंने यह मुनासिब समझा कि इनको कुछ खिलाकर पानी पिलाना चाहिये.

३९—मैं नदूँगा.

एक फकीर एक साहूकारकी दूकानपर गया और कहा बाबा कुछ दिला. साहूकार उसवक्त हिसाब लिख रहाथा बोला साईं साहब देखो हमने उसजन्ममें बहुत दिया जिस्का बदला हमको यह मिलाहै कि रातादिन तो रुपयोंकी चौकसी करनी पड़ती है और हिसाब लिखते २ उमर व्यतीत हुई जाती है इससे अब मैं न दूँगा किसी दूसरे घर जाइये ।

४०—अफीमचीकी नाक.

एकदफे एक अफीमचीकी नाकपर मक्खी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बैठी अफीमची उसवक्त पीनकमें था मक्खीसे कहने लगा अरी तू उड़जा उड़जा ऐं ऐं तू उड़ती नहीं ऐसा कहते २ बड़ी देर हुई जब मक्खी न उड़ी तब अफीमचीने जेबसे चट चाकू निकाल अपनी नाकपर ऐसे जोरसे मारा कि नाक जड़से कटगई तब आप मक्खीसे कहनेलगे हरामजादी अब काहेपर बैठेगी अबतो मैंने तेरा अड्डाही उड़ादिया. आपको नाक कटनेका कुछ रंज न हुआ पर मक्खी उड़ानेकी खुशी हुई.

४१-दमड़ी कौड़ी.

एक गबडू नामका आदमी कहींसे चलता २ एक भठिहारेके घर आया उस वक्त भठिहारा कहीं बाहर गयाथा घरमें भठिहारिन मौजूदथी गबडूने भठिहारिनसे कहा हमको यहां रातभर ठहरनाहै और हमारे पास देनेको शिर्फ दम-ड़ीकी कौड़ीहैं भठिहारिन बोली हम दमड़ीकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कौड़ीले ठहरने नहीं देंगे । गबडू बोला भठिहा-
रिन! देखो दमड़ीकी कौड़ी क्या थोड़ी होतीहैं ?
समझो एक चिलम तम्बाकूकाही कामचला फिर
हम तुम्हारे घरमें नहीं पडेंगे हम बाहर मैदानमें
सो रहेंगे. ऐसा सुन भठिहारिनने कहा अच्छा
बाहर पड़रहो । थोड़ीदेरके बाद भठिहारिनने
पूँछा क्या मियाँ खाना न खाओगे ? वह बोला
बीबी क्या देकर खानाखायँ ? भूखतो लगीहै पर
पास एकही दमड़ीहै. इतना कह बाहर बिस्तर
लगा सोरहा. जब भठिहारा घर आया तो बीबीने
कहा आज फलाने जगहका बुलौआ आयाहै
और खानाभी वहीं खानाहोगा आप चलेंगे या
नहीं ? भठिहारा बोला बीबी तुम्हीं जाओ मुझेतो
आज भूखकमहै अगर होसके तो थोडा बहुत
साथ लेतेआना. बीबीने कहा अच्छा तो तुम
घरहीमें सोरहो लड़काभी सोताहै मैं दोनोंके लिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाना लेआऊंगी. इतना कह बीबी चलती हुई
भठिहाराभी भीतर जा पलँगपर सोरहा. गबडू यह
सब हालपड़े २ सुनतारहा. जब बीबी को गये थोड़ी
देरहुई कि आप लगे बरबराने "याखुदा आज किस
कम्बखतका मुँह देखा कि आधीरातहुई अबतक
खाना नहीं मिला और अबमैं जबर यहांआयाकरूं-
गा भठिहारेके घर कभी न उतरूँगा. यहाँ बाहर
नींदही नहीं आती ऐसा कह बकरहाथा कि इस्की
आवाज भठिहारेने सुनी. समझा कि कोई मुसा-
फिर बाहर पड़ाहै बीबीने ठहरा तो लियाही होगा
शायद जल्दी के सबब पलँग इसे बिछानेको
नहीं दिया ऐसा शोच उससे पूंछा क्योंभाई ! क्या
बकतेहो ? गबडू बोला कहते क्याहैं ! यहां पड़ेहैं
नींद नहीं आती आधीरात होगई. इसपर भठिहा-
रेने कहा अच्छा तुमजाओ भीतर पलँगपर
सोरहो हम यहां सोतेहैं ऐसा कह आप वहीं जा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोरहा और गबडू पलँग पर जा लेटा अब जब भठिहारिन बाहरसे आई तो जाना कि मियाँ पलँग पर सोतेहैं पलँगके पास जा कहनेलगी मियाँ खानाखालो गबडू चुपचाप उठा और खाना खानेलगा. इतने में बीबीने कहा मियाँ चिराग़ जलादूं ? गबडूने मुँह बनाकर कहा रहनेदो हम खाचुके इसपर झटपट खानाखा सोरहा बीबीभी अपना भठिहारा समझ पलँगपर सोरही थोड़ी देरके बाद बीबीने कहा आज जहाँ मैं गईथी वहाँ एककी शादीथी आज सब रसूमात होगई एक रसूम कल बाकीहै सो मियाँ उसमें मुझे दो रुपये देनेपड़ेंगे सो मुझे सुबहको दोरुपये देना. यह सुन कर गबडू पड़े २ कहताहै "बीबी तुम जो कुछ कहो लेकिन हमतो पेश्तर ठहरा चुकेहैं कि हमारे पास एक दमड़ी है यह सुनतेही भठिहारिन जानगई कि वही मुशाफिरहै और अपने कियेपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पछताने लगी ! मनमें सोचनेलगी कि अगर मियाँने सुबहको पूँछा कि खानालाई तो क्या जवाब दूँगी ऐसा सोच चट उठी और खाना लेने शादीके घर चली इतने में गबडूने सोचा क्या ढंग करना चाहिये कि जिससे बाहर चलें इतनेमें मालूम हुआ कि इनके पलँगके पास उसका लड़का सोताहै लड़केको आपने एकलात मारी कि इतनेमें लड़का चिल्लाकर रोनेलगा तब आपने भठिहारेको पुकारकर कहा मियाँ भठिहारे ! ये तुम्हारे लड़के यहां चींपों करते हैं हम अब पलँगपर न सोवेंगे आपही आकर सोरहो मैं वहाँ जाकर सोरहूँगा. यहकह गबडू फिर बाहर आकर सोरहा अब बीबी जब शादीके घरसे खाना लेकर लौटी तो वह क्या जाने कि फिर यहाँ अदल बदल होगईहै वहतो जानती थी कि मियाँ भठिहारे बाहर सोतेहैं इसलिये बाहर उस्के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बिश्तर पर सोरही इतनेमें यह कुसमुसाने तो बोली"क्यों मियाँ खाना खाओगे!"पर मियाँ तो भीतर पलँगपरथे वहाँतो गबडू सोताथा. जब गबडू ने यह सुना धीरेसे कहा"हम नखा-येंगे" इतना सुन भठिहारिन उन्हींके संगसोरही। थोड़ी देरके बाद बीबीने फिर कहा"मियाँ आज शादीकी कुलरशूमात होगईहैं सिर्फ एक रशूम-रहगईहै सो कलहोगी उस्में मुझे दोरुपये देना-पड़ेगा सो आप सुबहको मुझेदेना । यहसुन गबडू चट बोल उठा "हरामजादी । तुझसेमैं के दफेकहूं ! माँगते २ जान खागई हमारा तुम्हारा तो एक दमड़ी का क़रार सो ये ले—इतनाकह दमड़ी कौड़ी निकाल उस्के सामने फेंकदी और कहा अब हम तुम्हारे यहाँ कभी न टिकेंगे ऐसा-कह चलदिया.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

४२—वाहिद चश्म.

किसी जगह नुमायशगाह भरीथी. और देख-नेवालोंसे फी आदमी एकरुपया लियाजाताथा तबलोग भीतर देखनेको जाया करतेथे. कहींसे एक वाहिदचश्म आया और आठआना निका-लके देनेलगा । महसूल लेनेवालेने कहा आठ-आने और दो एकरुपया लगताहै वाहिदचश्म बोला " भाई ! एकरुपया तो दो आँखवालोंके लियेहै क्योंकि वे दोनोंआँखोंसे देखैंगे मेरी तो एक आँखहै मैंतो एकही आँखसे देखूंगा इसलिये आठआनेमें देखने दीजे.

४३—बातकी करामात.

एक आदमीकी औरत निहायतही कंजूसथी. उस्का पुरुष अगर किसीको कुछ दान पुण्यकरे तो औरत बड़ी उछलकूद करतीथी यदि वह किसीको कुछ खिलावे पिलावे तो वह आकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाधा डाला करतीथी. एकदिन इस आदमीने ब्राह्मणोंका नेवताकिया और अच्छा २ भोजन बनवाया जब सब ब्राह्मण भोजन करने बैठे इत्तिफ़ाक़से उस आदमीको बाज़ारमें किसी कामकेलिये जानापड़ा. इतनेमें उस्की औरत भीतरसे निकल ब्राह्मणोंसे कहने लगी "जो हमारे घर भोजनकरे सो गाय खाय" यहसुन सब ब्राह्मण पत्तलपरसे उठ २ घर चलनेको उद्यतहुये कि इसी बीचमें वह आदमी बाज़ारसे आपहुँचा और ब्राह्मणोंसे पूँछा "महाराज! आपलोग क्योंनहीं भोजन करते ?" उन्होंने कहा तुम्हारी औरत कहतीहै कि जो हमारे घर भोजन करे सो गाय खाय. यह सुन उस आदमीने कहा तो इस्में नाराज़होनेकी कौनसी बातहै ? मेरी औरत जो कहतीहै कि जो मेरे घर खाय सो गायके खाय सचतो कहतीहै आप इसे समझे नहीं उस्का मतलब यहहै कि जो हमारे घर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भोजन करे सो गाय २ के भोजन करे याने गाता जाय और खाता जाय ऐसा इसने उन ब्राह्मणोंको समझाकर सबको भोजन कराय विदा किया.

४४-जी हुजूर.

एक रोज़ अकबर बादशाहके बावर्चीने भुट्टे पकाये मगर लज्जतदार न पके, जब बादशाह खानेको बैठे तो इनको भुट्टे अच्छे नलगे और चीजें खाकर उठगये, जब बाहर आये तो बीरबलसे कहा " बीरना ! भुट्टे क्या खराबहैं ? आज मैंने खाये तो उनसे तबियत नफरत करनेलगी" बीरबलने कहा जीहुजूर भुट्टे ऐसीही खराब चीज़हैं खानेमें बुरे मालूम होतेहैं, फिर कई दिनोंके बाद एकदिन बावर्चीने फिर भुट्टे पकाये और उसरोज़के बहुत अच्छेबने, जब बादशाह खाने को बैठे तो उनको बहुत लज्जतदार मालूम हुये और बहुतखाकर बाहरआये तो बीरबलसे कहनेलगे,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"ऐ बीरबल! भुट्टा कितनी उम्दा वस्तुहै कि आज मैं बहुत खागया" यहसुन बीरबल बोला "जीहु-जूर भुट्टा ऐसीही अच्छी वस्तुहै कि खातेही जाइये यह सुन बादशाहने कहा " क्यों बीरबल इस्का सबब क्याहै? कि पहले जब मैंने तुमसे पूँछाथा तब तुमने खराब कहा और अब उसे अच्छा कहते हो" बीरबलने कहा "हुजूर मैं आपका नौकरहूँ आपके ऐसा कहूँगा कुछभुट्टेका नौकरनहींहूँ कि उस्के ऐसा कहूँ.

४५–सब खैरियत है.

एक खाँ साहब परदेशगये. ये ऐसे कंजूसथे कि कभी किसीको खैरात एककौड़ी नहीं देतेथे यदि खानाखाते वक्त कोई सामने आजाय तो उससे यहभी न पूंछें कि क्यों भाई कुछ खाओगे । थोड़े दिनोंके बाद इनके देशका एक आदमी उसीदेशमें इनको पूंछते २ इनके पास आया । उस वक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खांसाहब खाना खारहेथे और इस आदमी को भी भूख लगीथी. लेकिन् यह खाँसाहबकी आदतको जानताथा मनमें कहनेलगा कि इनके साथ कुछ चाल चली जाय तो खाना खानेको मिले नहीं तो ये काहेको देने चले ऐसा विचारकर खाँसाहबसे बोला "जनाब आपके परोसीने आपको सलाम कहाहै" खाँसाहब बोले "क्यों भाई हमारे घरके लोग तो सब अच्छीतरहसे हैंना" आदमी बोला "जीहां सब खैरियतसेहैं" खाँसाहबको रहाई नपड़ी थोड़ीदेर बाद फिर पूंछउठे "सब अच्छी तरहहैं ?" आदमी बोला "जीहाँ हैं तो सब अच्छी तरह पर आपका टाइगर नामका कुत्ता मरगया."

खाँसाहब—क्योंभाई कुत्ता कैसे मरगया ?

आदमी—साहब वह जो आपके ऊंटथे वे जो मरे सो यह उनका गोश्त मारे भूखके खागया इससे मरगया.

CC-0. JangamWadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाँसाहब–अरे ऊंटभी मरगये क्या?

आदमी–जीहाँ जनाब.

खाँसाहब–क्योंभाई ऊँट कैसे मरे?

आदमी–जनाब आपकी बीबी जो मरी सो ऊँटोंको कोई खाना देनेवाला न रहा सो भूँखके मारे मरगये.

खाँसाहब–हैं! हैं! बीबीभी मरगई क्या?

आदमी–हाँसाहब.

खाँसाहब–याखुदा ये बड़ा ग़ज़ब हुआ क्योंजी! बीबी कैसे मरी?

आदमी–सरकार! आपके लड़के जो मरे सो उनके ग़मके मारे बीबीभी मरगई.

खाँसाहब–हाय! अफसोस!! लड़के भी नरहे क्योंजी! लड़कों को क्या हुआ?

आदमी–हुजूर बारिशसे आपका घर गिरपड़ा सो लड़के दबकर मरगये.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाँसाहब—हाय कमबख्त ! येतो सब चौपट होगया और तू कहता है सब खैरियतहै ! ऐसा कह खाँसाहब खाना तो अलग सरका दिया और भूखे उठ घरको रवानाहुये । यह आदमी जब खाँसाहब चलेगये तब उनका खाना खाकरके चलता हुआ.

४६—घमण्डी दोस्त.

एक ग़रीब जब धनीहोगया तो उस्का एक लँगोटियायार (लड़कपनका साथी) उससे मिलने गया. जब यह उस्के घर पहुँचा तब उसने पूंछा तूकौनहै ? कहाँसे आयाहै ? यह अपने दिलमें शर्मिन्दाहो कहने लगा आप मुझे नहीं पहँचानते मैं आपका फलाना लँगोटिया यार हूँ और इसवास्ते यहाँ आयाहूँ कि मैंने सुनाथा कि आप एक आँखसे अंधे होगयेहैं पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ आनेपर ज़ाहिरहुआ कि एकसे नहीं बल्कि दोनों आँखसे आप अंधे होगये.

४७--न जमी.

एक जगह दो हँसोड़ बैठे बातचीत कर रहेथे इतनेमें एक बुड्ढा लाठी ठेंगता हुआ सामनेसे निकला। इसेदेख एक हँसोड़ बोला "बड़ेमियाँ! नीचे २ क्या देखते चलतेहो?" मियाँजी समझे मुझसे दिल्लगी करताहै इसे ऐसाही जवाब देना-चाहिये. ऐसा सोच मियाँजीने कहा "मेरी जवानी गिर गईहै उसीको ढूंढ़ता फिरताहूँ" यह सुन एक दूसरा हँसोड़ जो वहीं बैठाथा बोलउठा "बड़े मियाँ ऐसा क्योंनहीं कहते! कि मौतके दिन क़रीब आये सो क़ब्रके लिये जमीन ढूँढ़ताहूँ मियाँ यह सुन बड़े शरमिन्दा हुये और दिलमें कहने लगे मेरी बात न जमी.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

४८--चौबेका नेवता.

एक बनियाँके यहाँ श्राद्धथा सो उसने विचारा कि एक ब्राह्मणका नेवता तो करना ज़रूरहै । पर ब्राह्मण ऐसा न्योतना चाहिये जो कम खाताहो ऐसा विचार ब्राह्मणकी खोजमें निकला रास्तेमें इसे एक मथुरिया चौबे मिले यह वृद्धथे सो बनियेने जाना कि यह बहुत कम खाते होंगे ऐसा सोचकर चौबेसे बोला "चौबेजी अब तो आप बूढ़े होगये आहार भी आपका घट गया होगा" चौबेजी समझगये कदाचित् इस्की नेवता करनेकी मन्शा होगी नहीं तो मेरा आहार क्यों पूँछता कहने-लगे "हाँ यजमान अबतो पौवाभरही खाऊँहूँ" ऐसा सुनके बनियाँ तुरत बोलउठा "तो चौबेजी कल्ह भोजन हमारे यहाँ कीजियो" इतना कहके चलागया दूसरे दिन अपनी औरतसे बोला आज चौबेजीको नेवता निवति आवेंगे सो जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माँगे सरंजाम देना इतना कहके दूकानको चला-गया। थोड़ीदेरमें चौबेजीभी आपहुँचे सो झट चौबेजीको मोदनने बैठाया। चौका वगैरह लगा दिया और पूँछनेलगी कि चौबेजी मोदी कहगये हैं कि जो कुछ चौबेजी कहें सरंजाम मँगादेना सो कहिये कौन २ चीज़ें चाहिये? चौबेने विचारा कि अबतो बनपड़ी बोले "मोदन! जो मँगा-यदो कुछ मैदा, कुछघी, कुछ शक्कर, कुछ-साग पात."

मोदन-चौबेजी मैदा कितनी मँगाऊं?

चौबे-चार सेर.

मोदन-और घी?

चौबे-"घीअऊ चारसेर"

मोदन-और चौबेजी शक्कर?

चौबे-"शक्कर ढाईसेर बहुत होगी"

मोदनजीने यह सब घरमेंसे निकालके रखदिया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और चौबेजीने अच्छे २ बड़े २ लड्डू बनाये जब बनचुके तो मोदनसे बोले मोदन कुछ लड्डुओंपै दक्षिणाहूँ तो धरो. मोदन बोली "चौबेजी कहदी-जिये क्या दक्षिणादू ? मोदी कहगयेहैं कि चौबेजी जो माँगें सो देना उन्हें नाराज़ मत करना" सो जो दक्षिणा आप माँगें सो देऊँ.

चौबेजी—"दक्षिणा थोड़ेही लूँगो"

मोदन—"कितनी कुछ ?"

चौबे—" सेर पीछे १०० रुपये"

मोदनने ४००) रुपये निकालके देदिये और चौबे जीने लेलिये और लड्डूखाकर घरको रवानाहुये । रास्तेमें सोचनेलगे कि बनियाँके पीछे मैं यह सब लायाहूँ वह कुछ नकुछ बिद्दत करेहीगा सो ये महाराज झट बीमार होकर पड़रहे अब बनियाँ दूकानसे घरआया कि चौबेजी कुछतो प्रसाद छोड़ाही होगा सो मैं खाऊँगा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और आज व्यारो न बनाऊँगा घर आके औरतसे पूंछने लगा.

बनियाँ-"कायरी चौबेजी आयेते ?"

स्त्री-"आओ तो तो दैमारो?"

बनियाँ-"चौबेजीको खूब भोजन कराद्ये ?"

स्त्री-'हाँ जौन कछू सरञ्जाम माँगी सोदेदयोतो'

बनियाँ-"चौबेजीने का बनाओ तो?"

"स्त्री-लडुआ बनायेते"

बनियाँ-कछू लडुआ बचे हैं ? "

स्त्री-"एक टूकातो बचो नइयाँ सबले उनैंके नेंगे लगगये"

बनियाँ-"कायेके लडुआ बनायेते ?"

स्त्री-"मगदरके"

बनियाँ-"तो बेसन मँगाओहू है ? "

स्त्री-"हाँ"

बनियाँ-"कितनो ? "

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री—"चार सेर"

बनियाँ—"अरे राम जो काम जो ४ सेर अरे ४ सेर इकट्ठो ?

स्त्री—"हाँ"

बनियाँ—"और घी शक्कर ?"

स्त्री—"उतनऊ घी और आधी शक्कर लगीती"

बनियाँ—"अरी राँड घर तो लुटादयो कायेईमें तोरी भलमनसी दिखापरी अरी तेलीके तेल होतहै तो का पहारपै चुपरतहै."

स्त्री—"मैं काकरों तुमईतो कहगयेते के चौबे जो माँगे सो देदेओ."

बनियाँ—"और कछू दक्षिणा दईहूहै ?"

स्त्री—"हाँ दक्षिणा सोई दईहै."

बनियाँ—"कितनो ?"

स्त्री—"४००) रुपये."

बनियाँ—"ऐं"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री–"४००) रुपये."

बनियाँ–ऐंरी जोका बतात है.

स्त्री–"बतात काहों तुमई तो कहगयेते के चौबे जो माँगे सो देदईये."

बनियाँ–"अरे तोरो सत्यानाशहोय गजब कर दयो देख अब जातहों चौबेको कैसो २ डाँटतहों का लुगाइनसों ऐसो ठगने परतहैं जबेतो मोंसे कहततो कि पावभर खातहों अब चार सेर कैसे खागयो."

ऐसा कहके बनियाँ चौबेजीके घरगया। चौबेजीतो पहलेही जानगयथे कि बनियाँ विना-आये नहीं रहेगा सो ये पहिलेसे बीमार पड़रहेथे और चौबनको सिखादियाथा कि खूबरोना। अब जब बनियाँ चौबेजीके घर पहुँचा तो पूँछने लगा "चौबनजी! चौबे कहाँ हैं?" चौबन बोली "आप मोदी भलेआये चौबेजीतो घड़ी दोघड़ीकेहैं तुमने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अच्छा नेवता किया मिठाईमें कौन जाने तेरी लुगाईने विष खवादियो काकरों जितनी दक्षिणा मिली सो सब डाक्टरनने लैलीन्हों और ५००) रु० माँगतहैं सो अब कहाँसेदें मैंतो अब पुलिसको जातीहूं और तुम्हें पकड़ातीहूं मेरातो जन्मभरका नुक्शान हुआ" ऐसाकह चौबनजीने बनियेंका हाथ पकड़कर खूब रोना शुरूकिया. बनियाँ विचारा औरभी घबड़ाया कि कहाँ मैंतो अपने रुपये लेने आयाथा कहाँ ये दूसरी आफत् आन-पड़ी विचारने लगा कि जोहुआ सोहुआ जो रुपयेगये सोगये अब किसीतरह घर जाना चाहिये नहींतो कुछ और विद्दत खड़ीहोगी ऐसा विचार चौबनसे हाथ छुड़ाने लगा चौबन बोली "मोदीजी ! अब कहाँ जातेहो चौबेजीको अच्छा करो नहींतो कुतवाली चलो"। बनियाँ और घब-ड़ाया कहनेलगा चौबन जो मैंने खिलाया पिलाया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सबकुछ किया अब कुतवाली चलूँ ? चौबनजी बोलीं " चलोगे कैसेनहीं न चलो तो मैं यहीं चपरासी लाऊंगी और नहींतो ५००) रुपये और धरो जिस्में चौबे बचें और चौबे मरे तो फाँसी तुम्हें लगी" बनियाँने चट धीरेसे ५००) रुपये रखदिये और पछताता हुआ घर चला आया.

४९-विद्यार्थीकी लीला.

काशीजीमें एक शास्त्रीजीके यहाँ चार विद्यार्थी विद्या पढ़नेगये ! कुछ दिनोंमें वे चारों खूब संस्कृत पढ़कर पण्डित होगये शास्त्रीजीकी एक लड़की बरयोग्यथी एकदिन शास्त्रीजीने अपने मनमें विचारा कि कन्याका विवाह कहीं करदेना चाहिये सो अब बर कहाँ ढूढें इन्हीं चार विद्यार्थियों मेंसे एकसे करदें ! कारण बड़े आद-मीसे ब्याह करनेकी आकाँक्षा तो बहकरे जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग़रीबहो अपनेको तो ईश्वरने खूब धन दियाहै
ऐसा विचार विद्यार्थियों मेंसे चूड़ामणि विद्यार्थीको
कन्या ब्याहदी! चूड़ामणि पढ़लिखके तो पण्डित
होगयेथे पर अक्क इनमें ज़राभी नथी एकदिन
शास्त्रीजी दामाद को समझाने लगे "सुनो ! मेरे-
कोई लड़का नहीं है और म अब बूढ़ाहुआ अब
तुम्हीं मेरे लड़केहो मैंने यह सब धन तुम्हें सौंपा
यदि तुम इससे उद्योग करते जाओगे तो सात
पीढ़ीको तुम्हारे बसहोगा" दूसरे दिन चूड़ामणिने
कुदारीली और अटारीकी छत खोदना
शुरू किया इतनेमें शास्त्रीजी आ पहुँचे और
ये चमत्कार देख कहनेलगे "यह क्या करतेहो?"
दामाद बोला "साहूजी शास्त्रमें तो लिखाहै"
"उद्योगं पुरुषलक्षणं "(उद्योग करना पुरुषका
लक्षणहै) सो मैं उद्योग कररहाहूँ" शास्त्रीजी
बोले "अरेभाई ऐसेमें घर गिरेगा कि बचेगा?"

-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दामादबोला "गिरे चाहे बचे लेकिन उद्योगी पुरुष शान्त कब बैठतेहैं ! " तबतो शास्त्रीजीने समझा कि ये किताबके कीड़ेहैं पढ़ा लिखातो बहुत पर अक़ल नहुई कहनेलगे अच्छा उतरआ-ओ हम तुम्हें कोई दूसरा उद्योग बताते हैं सो करो येतो हुआ अब थोड़े दिनोंके बाद शास्त्रीजीकी लड़की बालिग़हुई तब शास्त्रीजीने खूब गाना बजाना करके दामाद और लड़कीका रंगमहलमें जानेका प्रथम दिन नियतकिया। नियत दिन-पर दोनों स्त्री पुरुष रङ्गमहलमें गये. स्त्री इनकी बड़ी सुन्दरीथी ज्योंहीं चूड़ामणिने स्त्रीको देखा त्योंही उसे यह वाक्य यादआया "भार्य्या रूप-वती शत्रुः" (रूपवती स्त्री शत्रुहै) फिर दूसरा वाक्य याद आया "शत्रोश्च हननं कुर्य्यात्" (शत्रुको मार डालना चाहिये) इतनेमें तीसरा वाक्य याद आया "स्त्रीवधः सर्वघातकः" (स्त्रीका मारना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़ापापहै) तबतो इन तीनों वाक्योंमें इन्हें संदेहहुआ और सोचनेलगे क्या करना चाहिये यहतो इससोच विचारमें पड़े उधर स्त्रीको नींद-आगई वह सोरही । सोचते २ चूड़ामणिने विचारा कि रूपवतीस्त्री शत्रुतो हैही, पर यदि रूपवतीको कुरूप करदिया तब मित्र बन-गई इससे इस स्त्रीको कुरूप करके मित्र बनालेना चाहिये अब यह सोचनेलगा कि इसे कुरूप कैसे बनाऊँ फिर इसे यह वाक्य यादआया " नासिका मुखमण्डनम् " (नाकही मुँहकी शोभा है) सो इस्की नाकही काटलेनी चाहिये । ऐसा विचार ज्योंही वह छुरीले स्त्रीकी नाक काटने लगा त्योंही वह स्त्री नींदसे सचेतहो चिल्ला उठी चिल्लानेकी आवाज़ सुनके शास्त्रीजी और घरके सबलोग दौड़पड़े शास्त्रीजीने जब यह सब वृत्तान्त सुना तब सोचनेलगे यहतो बड़ामूर्ख है ऐसा नहो कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एकदिन यह मेरी कन्याका जी लेले चूड़ामणिसे बोले "अरेमूर्ख! मेरे घरसे चलाजा और जहाँ तेरे मनमें आवे वहाँरह" चूड़ामणिने कहा "बहुत अच्छा" और कलेवा बाँध वहाँसे चल निकला। दरवाज़ेके बाहरही आयाथा कि उसे यह वाक्य याद- आया "पंचभिःसह गंतव्यम्" (पांच आदमीके साथ चलना चाहिये) अब पाँच आदमी कहाँ ढूंढ़ें इतनेमें चार आदमी एक मुर्दा लिये और एक आदमी मुर्दाके पीछे हंडी लिये ऐसे पांच आदमी वहाँसे निकले सो चूड़ामणिभी उनके साथ चल निकला ये पाँचो आदमी मुर्दा जलानेके लिये नदीके तटपर ठहरे चूड़ामणिभी वहीं ठहरगया अब चूड़ामणिको भूखलगी सो वह चट कलेवा निकाल खाने वालाहीथा कि इतनेमें यह वाक्य याद आया "इष्टैश्च सहभुज्यतां" (मित्रके साथ भोजन करना चाहिये) परन्तु यहाँ इष्ट कौन मिले इसीकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिक्रमेंथा कि फिर उसे यह वाक्य याद आया "पदेन सप्तपदे मैत्री" (जो सातपग अपने साथ चले वही मित्रहै) तो यह पांच आदमी तो हमारे साथ बहुत दूर तक आयेहैं ऐसा विचार चूड़ामणिने उन पाँच आदमियोंसे कहा "मित्र! आओ भोजन करलेवें" पाँचो आदमी कहनेलगे कि देखो हमलोगतो मुर्दा फूँकने आयेहैं और यह कहताहै कि भोजन करलेव जान पड़ताहै कि यह पागलहै बोले हमलोग भोजन नहीं करैंगे तुम्हीं करो। चूड़ामणि ने सोचा कि येतो नांहीं करते हैं और अकेले भोजन करना नहीं चाहिये. ये इस विचार में था कि एक कुत्ता वहाँ पहुँचा उस्को देख चूणामणि ने कहा कि इसी को मित्र बनाना चाहिये परन्तु मित्र वह है जो अपने साथ सात पग चले सो इसी को सात पग चला के मित्र बनालूं सो झट कुत्ते को सात पग चलाके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूड़ामणि ने मित्र बनालिया और उसे अपने साथ भोजन कराया इस्के पश्चात् चूड़ामणि दूसरे देश को गया। वहाँ किसी अपराध पर चपरासी ने इन्हें पकड़ा और राजा के पास लेगया। चपरासी चूड़ामणि को दरवाज़ेपर बिठला आप राजाके पास गया और कहनेलगा " सर्कार! एक गुनाही लायाहूं" राजाने कहा "अच्छा उसे यहाँ लाओ" चपरासी गया और चूड़ामणिसे बोला" चल तुझे राजाने बुलाया है"।यह मूर्ख यही जानता था कि अब राजा से भेंट होगी मेरे बड़े भाग्य हैं और यह नहीं जानताथा कि मैंने अपराध कियाहै इसी-लिये चपरासी पकड़े लिये जाता है। बड़े हर्ष पूर्व्वक जाने को तय्यार होगया अब फिर इन्हें यहवाक्य सूझपड़ा " रिक्तपाणिर्न-पश्येत राजानं देवतां गुरुम्"(राजा, देवता और गुरुके सन्मुख खालीहाथ नहीं जानाचाहिये) सो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ नकुछ राजा को भेंट लेचलना चाहिये परन्तु उस समय इनके पास कुछभी नहींथा झट आपने अपनी धोती उतार हाथ में लेली और नंगे राजाके पास चला गया राजाने इसे नंगा देख पूँछा "क्यों बे! दरबार में नंगा क्यों आया" चूड़ामणि बोला "महाराज! इस समय मेरे पास कुछनहींथा और मैं यह जानताहूं कि राज्यदरबार में कुछ भेंट लेजाना चाहिये सो मैं यह धोती भेंट में लाया हूँ" राजा और सभाके लोग इसे मूर्ख समझ हँसपड़े सो चूड़ामणिभी हँसने-लगा राजाने पूँछा "क्योंबे! तू क्यों हँसा" चूड़ा-मणिबोल उठा "यथा राजा तथा प्रजाः" राजाने जानलिया कि यह पढ़ातो बहुतहै परन्तु निरा-मूर्ख है ऐसा समझ उसे दरबारसे निकलवादिया.

५०—बीरबल.

एक रोज अकबर बादशाहने बीरबलसे पूँछा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अय बीरबल ! मनुष्यके लिये ईश्वरने सख्तसजा क्या रक्खीहै बीरबल बोला " जब ईश्वर जिस मनुष्यपर कोप करताहै तो उस्के आलऔलाद (लड़केबाले) बहुतदेताहै, चुनांचे आपही अपने राज्यमें देखिये कि जोर खानेके मुहताज़ (ग़रीब) हैं उनके लड़केबाले बहुतहैं "

५१-चालाक लड़का.

एक मियाँ जीके पास एक लड़का नौकरथा. एकरोज़ मियाँजी शुबहको मछलीकी शिकार करलाये और लड़केसे कहा हम कचहरी जातेहैं इनको साफकर पकाना।लड़केने मछलीको काट-कर एक थालीमें रख किसी कामको चलदिया।इत-नमें बिल्ली आकर मूँड़ पूँछको छोंड़ सब खागई. जब लड़का आया और देखा कि बिल्ली सब खागई तो कचहरी दौड़ता हुआ गया और कहने लगा मियाँजी ! मियाँजी !!"फसनगर लुट गया" मियाँ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीने पूँछा "किसने लूटा" लड़केने कहा "बिल्ली बिल्लावतेके बादशाह आयेथे सो लूटलेगये" फिर पूँछा कोई बचेहैं (याने कुछ दोचार बोटी बचीहैं) लड़केने कहा सरदार सिंह और चुमतड़खाँ बाक़ी बचेहैं (याने शिर और पूँछ बाकी बचगयेहैं) यह सुन मियाँजीने कहा अच्छा उन्हींकी चढ़ाई करो (याने उन्हीं को पकाओ) जब लड़का घर आया और चूल्हा सिलगा मछली चढ़ाने बैठा तो देखा नमक नहीं है झट कचहरीको दौड़गया और कहने लगा मियाँजी! मियाँजी!! "नूरनशाह खफा होगये" (याने नमक नहीं है) यह सुन मियाँजीने कहा कि जाओ हँस्सीखाँसे कहो कि घासीखाँको लावें और घासीखाँ नूरनशाहको मनालावें (याने हँसिया ले जाकर घास काटकर और उसे बेचकर नमक मोल लेआओ) यह सुन लड़का निमक लाया जब मछली हंडीमें छोड़ी तो हंडीका मुँह छोटा होनेके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारण चमची उस्के भीतर नगई तो फिर मियाँ-जीके पास दौड़ागया और कहा मियाँजी! मियाँजी!! कालेखाँ लगाम नहीं झेलते (याने हंडीके मुँहमें चमची नहीं जाती) यह सुन मियाँजीने कहा तो उलटी लगाम देदेओ ग़रज़ जबरकोई ग़ैर मौक़ेकी बात कहना पड़े तो यह लड़का इसीतरह बातोंको बनाकर कहाकरे कि दूसरा कोई समझ नसके.

५२—सवालका जवाब.

एकरोज़ अकबर बादशाहने बीरबलसे कहा " बीरबल ! बैलका दूधलाओ " बीरबल बोला "बहुतअच्छा परन्तु दोदिनकी छुट्टी मिलनी चाहिये " छुट्टी पाकर जब बीरबल घरआया तो दिलमें बहुत हैरान और परेशान हुआ और सोचने लगा कहनेकोतो कह आयाहूं लेकिन जब बैलका दूध होताही नहींहै तो लाऊंगा कहाँसे? ग़रज़ इसी फिक्रमें एकादिन गुज़रगया और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाना पीना कुछ नहीं खायापिया । जब इनकी घरवाली कुछ पूँछे तो उससे कुछ हालही न बतलावें जब वह बहुत आरजू और मिन्नत करने लगी तब कहाकि बादशाहने बैलका दूध माँगाहै इसी फिक्रमें मैंहूं कि कहाँसे लाकरदूं बीरबलकी औरतने कहा कि अब आप उठिये खाना खाइये मैं शुबह होतेही बादशाहके हुजूरमें दूध देआऊंगी जब सुबहहुआ तो बीरबलकी औरतने तमाम अपनी सुनहली जेवर पहिन और उमूदा २ रेशमी कपड़ोंकी एक गठरीबाँध एक फटीसी पुरानी धोती पहिन चली और जाकर गङ्गाकिनारे जहाँ बादशाहका महलथा कपड़े पछाड़ने- लगी. इत्तिफ़ाक़से बादशाहकी निगाह इसपर- पड़ी तो ग़ौरकर देखा कि यह कितने क़ीमतीतो जेवर पहिरेहै और कैसी हसीनहै और जो कपड़े यह पछाड़रहीहै सोभी बेशक़ीमतहैं इससे इस्का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हाल पूछना चाहिये कि क्या मुसीबत इसपर पड़ीहै ऐसा सोच अकबर बादशाहने पूँछा "अयने-कबख्त ! तुझपर ऐसी क्या मुसीबतपड़ीहै जो कोई संग न साथ अकेली कपड़े पछाड़ रहीहै यह सुन बीरबलकी औरतने कहा " हुजूर मेरे खाविंदको लड़काहुआहै और कोई लौंडी बाँदी हाज़िर नथी इसलिये मैंही कपड़े पछाड़ने आईहूँ" यहसुन अकबर बादशाहने कहा " तू क्या बकतीहै अरी कहीं मर्दकेभी लड़का पैदा होताहै?" यहसुन बीरबलकी औरतने जवाबदिया "हुजूर! कहीं बैलकेभी दूध हुआ है ?" यहसुन बादशाह समझगये कि जो हमने कल बीरबलसे सवाल कियाथा उसीका जवाब यह उस्की औरत देने-आईहै.

५३–अंधी दौलत.

अमीर तैमूरलंग जब हिन्दुस्तानमें आया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो लोगोंसे सुनरक्खाथा कि हिन्दुस्तानमें गाना बहुत अच्छा गातेहैं इसलिये एक गवैया बुलवाया और एक अंधा गानेको आया और इस तरह गाना सुनाया कि तमाम महफ़िल खुश होगई इसपर अमीरने गवैयासे पूंछा कि तुम्हारा नाम क्याहै ? उसने जवाबदिया "दौलत" यहसुन अमीरने हँसीसे कहा "कहीं दौलतभी अंधी होतीहै" गवैया बोला हुजूर अगर दौलत अंधी नहोती तो आप लँगड़ेके पास कभी नआती.

५४–दिल्लगी.

एक शख्सने अपने बेटेसे किसी बातपर कहा कि तू उल्लूहै उस्के बेटेने उलटकर कहा कि उल्लूतो नहींहूँ लेकिन उल्लूका पट्ठाहूँ.

दो आदमियोंने किसी देवतासे वरदान माँगा एकने कहा कि मैं चोरीतो करूँ मगर चोर नकहलाऊँ उसको देवताने कहा कि जा तू सुनार होजा.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरेने कहा कि मैं भोंकूंतो बहुत मगर कुत्ता न कहाऊँ देवताने कहा कि जा तू भाट होजा.

५५-माकूल जवाब.

एक मोलवी साहब लड़कोंको रोटियोंपर पढ़ाया करतेथे एकरोज़ एक लड़केने एक कुंडेमें-लाकर मोलवी साहबको खीरदी मोलवी बहुत खुशहुये खाते जातेथे और तारीफ करतेजातेथे ! मोलवीने लड़केसे कहा क्या तेरी माँ हमपर मोहित होगई है जो हमको आज खीर भेजीहै लड़केने कहा कि येतो मैं जानतानहीं मगर ये खीर मेरे वालिदके लिये बनीथी इस्में कुत्ता मुँह डालगयाथा. अम्माने कहा कि जा मोलवी साहबको देआ इतना सुन मोलवीने कहा कि लाहोलबिला यह कहकर वह कुंडा ज़मीनमें देमारा ये लड़का उसवक्त कुंडा फूटा देख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोकर बोला कि मोलवी साहब इस कुंडेमें तो मेरा भाई पाखाना फिरताथा आपने इसे तोड़ डाला मेरी माँ मुझे मारेगी.

५६—ईश्वरका ध्यान.

एक राजा कहीं जारहेथे रास्तेमें एक साधूको ध्यानमें बैठे देखा, जब घर आये तो नौकरोंसे कहा उस साधूको जो कल फलानी जगहपर बैठा-हुआथा बुला लाओ। जब नौकर साधूजीको बुलालाये तो राजाने साधूजीसे कहा "महाराज कल आप वहाँ बैठे क्या कररहेथे?" साधूने कहा ईश्वरका ध्यान कररहाथा यहसुन राजाने कहा "तो महाराज ध्यान करना आज मुझे सिखलादीजे जिससे ईश्वरके दर्शन मुझेभी हुआ करैं" साधूने कहा एक थैलाभर रुपया मँगाओ और एक सर्राफ (रुपये परखनेवाले) को बुलाओ जब रुपया साधूजीके सामने रक्खागया और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सर्राफभी आया तो साधूजीने एक खोटा रुपया उन रुपयोंमें मिला उस सर्राफसे कहा इन रुपयोंमेंसे खोटा रुपया परखकर निकालो सर्राफने थोड़ी देरके बाद वही खोटा रुपया जो साधूने मिलायाथा निकाल दिया यह देख साधूने सर्राफसे पूँछा कि रुपया परखना तुमने कितने दिनोंमें सीखा, सर्राफने कहा पाँच सात वर्षमें मुझे रुपया परखना आयाहै ! यहसुन साधूजीने राजासे कहा "देखो रुपया एक छोटी चीज़है जिस्का परखना कई वर्षोंमें आताहै और आप कहतेहो आज मुझे ईश्वरका ध्यान बतादो तो मैं आपको कैसे एकदिनमें सिखलादूं."

५७—कपड़ोंका आदर.

एक बुद्धिमानने किसी नगरमें जाके सुना कि इस्में एक दाता रहताहै जो परदेशियोंको खाना खिलाताहै ! बुद्धिमान पहले दिन पुराना और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैला वस्त्र पहरकर उस्के यहाँ गया उसने इसपर कुछ दया नहींकी और बैठनेको जगहभी नहींदी तब बुद्धिमान् बहुतही लज्जित होकर अपने घर फिरआया । दूसरे दिन अच्छी और उजली पोशाक (कोट, पतलून भाड़ेका पहिनकर) पहिर उस्के यहाँ गया । घरके मालिकने उस्का बहुत आदर किया और अपने पास बैठाके उस्के-लिये उम्दा २ भोजन मँगवाया बुद्धिमान् जब भोजनपर बैठकर खाना अपने कपड़ोंमें उठाने लगा तब घरके मालिकने पूँछा "यह आप क्या करतेहैं?" उसने उत्तर दिया कल मैं यहाँ पुराने और मैले कपड़े पहनकर आयाथा पर मेरी किसीने इज्जत नकी और भोजनभी किसीने नहींदिया आज मैं उजलेवस्त्र पहनकर आपके यहाँ आया और मानसे बैठकर भोजनभी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वादिष्ट पाया इससे जानाजाताहै कि यह भोजन वस्त्रके लिये मिलताहैं न मेरेलिये.

५८-मुँहतोड़ जवाब.

एक उस्तादने अपने एक शागिर्दपर इशारा कर कहा न जाने इसने इतनी आदतें कहाँसे सीखीं-हमें विश्वास है हमसे इसने कोई नहीं पाई लड़का चटपट बोलउठा-बहुत ठीकहै-क्यों-कि हमने आपसे बुरी आदतें पाई होती तो आपमेंभी बहुतसी कम हो जातीं.

५९-गँजेड़ीकी बात.

एक गँजेड़ी ने अपने लड़के को जो पिता सेभी बढ़कर गँजेड़ी था बहुत धमकाया और कहा कि हमलोग भी गाँजापीते हैं परन्तु तेरे समान गँजेड़ी नहीं हैं तुझे यदि गाँजा पीने की इच्छा ही है तो ऐसा गँजेड़ी न बनजा इतनाहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत है कि सवेरे उठ कर एक चिलम पीलिया हाथ मुँह धोकर एक चिलम फिर उड़ाया यदि दो एक मित्र आगये तो फिर दो एक चिलम पीलिया नहानेका समय हुआ तो एकाध चिलम पीकर नहाने गये, फिर खाना खाने उपरान्त एक चिलम पीलिया कर, मध्याह्न समय सोनेके पहले एक फिर उठनेके पश्चात् एक और पीली तो कुछ हानि नहीं फिर संध्या को घूमते समय मित्रों के स्थानपर दो एक चिलम पीलेना कुछ अनुचित नहीं है संध्याको घर आकर भोजन करके दो एक चिलम पीकर आनन्द से सोरहो यदि इस प्रकार पिया करो तो कौन तुझे गँजेडी कहेगा और फिर मेरा नामभी क्यों कलङ्कित होगा कि फलानेका लड़का बड़ा गँजेड़ी है.

६०—लक्ष्मी सूमकी वार्त्ता.

एक सूमके पास जब अधिक धन दौलत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(लक्ष्मी) होगई तब वह लक्ष्मीसे कहने लगा-

कवित्त.

दाता पास जाती कुछ आदर नहीं पाती,
अब मेरे पास आई तू बधाई बटवावरी ।
खाने दरखाने तहखानेमें बास देऊँ,
होओ न उदास तू चित्त मेरे चावरी ॥
खाऊँ न खवाऊँ मरजाऊँ तो सिखाय जाऊँ,
पूत मीत भाइनको आपनो स्वभावरी ।
शासत सकल सैहों कौड़ीतक न जान देहौं,
सो सूम कहत लक्ष्मी तू बैठे गीत गावरी॥१॥

यह सुनकर लक्ष्मी कहने लगी. सुनरे सूम-

कवित्त.

भारी घोड़ शारन तलावन तिलाक लिखो,
गाड़िगे अकब्बर बहुरि नाहिं बहुरे ।
ताके कवि बीरबल तृण सम गुण्यो नाहिं,
ऐसे हुँ न भये बलि कर्णहुँते लहुरे ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी कहत सब सूमनसों बार बार,
देहु लेहु खाव खर्च मोको जिन गहुरे ।
ताहूके न संगरही तीन लोक प्रभु जौन,
कालके चिन्हारे लोग मोंसे कहैं रहुरे ॥ १ ॥

६१—बड़ी भूलकी.

एक भला आदमी किसी बदमाशके पास उसे भला आदमी समझ किसी कारणवशात् जाबैठा. थोड़ी देरके बाद बदमाश अपना रूमाल जो उसने अपनी टोपीके भीतर रख-लियाथा ढूँढ़नेलगा लेकिन उसे यह याद नरही कि रूमाल टोपीके भीतर रखलियाहै ! जब ढूँढ़नेसे न मिला तो उसने उस भले आदमीसे कहा कि मेरा रूमाल तुमहीने चुरायाहै क्योंकि अभी मेरे पास सिवाय तुम्हारे और कोई नहीं आया इसपर वह भला आदमी बोला कि बाबा मैंने तेरा रूमाल नहीं चुरायाहै यदि तुझे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यकीन नआवे तो मेरे जामाकी तलाशी लेले, क्योंकि मैंभी अभी तेरे पाससे कहीं उठकरभी नहीं गयाथा इसपर उस बदमाशने उस्के जामाकी तलाशीली लेकिन् रूमाल उस्के पास नहीं निकला ! कुछ देरबाद उस बदमाशका हाथ शिरपर गया तो टोपीः गिरगई और जिसमेंसे वह रूमाल निकलआया जब रूमाल बदमाशहीके पास निकला तो उसने उस आदमीसे कहा मैंने बड़ीभूलकी जो आपको चोर बनाया यह सुन उस भले आदमीने कहा कि मैंनेभी बड़ी भूलकी जो आपको भलाआदमी समझ आपके पास आ बैठा.

६२-बुद्धिकी चातुर्य्यता .

कलकत्तेके हाईकोर्टमें एक स्त्री किसी मुक-द्दमेमें गवाही देनेको गई. जब उस मुकद्दमेमें पूँछपाँछ होरहीथी कि उस स्त्रीसे दूसरे तरफके वकीलने यह सवाल कियाकि जिस घरमें वह बात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुमने देखीथी उस घरमें कितने खम्भाथे? स्त्रीने तुरंत जवाबदिया कि उस घरमें इतने खम्भेथे यह सुनतेही वकीलने न्यायाधीशसे कहा "देखिये इस्के कहनेसेही मुक़द्दमा झूठाहै क्योंकि जितने खम्भे यह बतलातीहै उससे एक कमहै "इसपर उस स्त्रीने वकीलसे सवाल किया कि अच्छा! आपही बतलाइये कि इस कचहरीकी सीढ़ियाँ जिसपरसे आप रोज़ आया जाया करतेहैं कितनीहैं? वकीलने जवाब दिया कि इतनीहैं लेकिन् इनके बतलानेमें दोकी ग़लती हुई। उस स्त्रीने न्यायाधीशसे कहा अब आपही इसपर ग़ौर कीजियेकि जिस घरमें मैं शिर्फ़ एक दफ़े गईथी और उस्के खम्भे बतलानेमें मुझसे एक गलती हुई और जहाँसे वकील साहब रोज़मर्रा आया जाया करते हैं और उनसे दोकी ग़लती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुई तो इससे यही समझिये कि ये जब खुदही झूठ बोलते हैं तो फिर झूठे मुक़द्दमों को सच्चा करनेके लिये क्यों न कोशिशकरें.

६३—वकीली पेंच.

एक वकील का नौकर किसी कुँजड़े की दूकानसे कुछ सौदा लाया और कुछ दाम यह कहकर उधार करआया कि मैं फ़लाने वकीलका नौकरहूँ फिर देजाऊँगा। परन्तु उस कुँजड़ेको जब कई महीने तक वह बाक़ी दाम नमिले तब वह एक दिन वकीलके घरगया और इस बात पर सलाह पूँछी कि यदि किसीका नौकर कहासे कोई सौदा लावे और कुछ दाम उधार कर आवे तो उस बाक़ी दामकी नालिश किसपर करनी चाहिये? और किसस वे दाम वसूल होसक्तेहैं? मालिकसे या नौकरसे? यह सुन वकीलने कहा "वह दाम मालि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहीको देने पड़ैंगे" इसपर कुँजड़ेने कहा तो हुजूर! आपका नौकर इतने दिन हुआ कि इतने दाम आपके नाम उधार कर आयाथा सो दीजे। तब वकील साहबको बहुत बुरालगा और तुरंत रुपया सन्दूकसे निकाल उसेदिये। दूसरे दिन वकील साहबने उसी कुँजड़ेके नामसे २८) रु० का बिल बना नौकरके हाथसे भेजा.जब नौकरने कुँजड़ेपर रुपयोंका तक़ाज़ा किया कि जो तुम उसरोज़ सलाह पूंछने गयेथे उस्का मिहनताना तुमसे इतना चाहिये सोदो. तब कुँजड़ेने लाचार होकर २८) रु० यह कहतेहुये देदिये कि"वाहरे वकीली पेंच."

६४—करदेखिये.

किसी आदमीके घर बहुत चूहे बढ़गयेथे एक दिन उसने जाल लगा एक जीते चूहेको पकड़कर उस्के गलेमें एक छोटीसी घंटी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाँधदी। और उसे उसी जगह बिलमें छोड़दिया जब वह अपने बिलमें गया तो सब उस्के साथी उस्की घंटीकी आवाज़ सुनकर दूर २ भागचले यहाँतक कि आखरमें सब उस्के घरसे निकलगये.

६५—तरबूजकी चोरी.

एकरात कोई मनुष्य किसी खेतमें तरबूज चुराने गया और चार पाँच तरबूज तोड़कर घर चलाआया लेकिन् पाँचसौ रुपयेकी एक थैली जो उस्के पास थी खेतहीमें छूटगई जब खेतका स्वामी सुबहको वहाँ गया तो उसे रुपयोंकी थैली वहाँ पड़ी हुई मिली जिससे उसे मालूम हो गया कि रातको कोई तरबूज चुराने आया था इसपर उसने इस बातका विज्ञापन समाचार पत्रोंमें छपवादिया कि "अभी मेरे खेतमें तरबूज और लगे हैं"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

६६-चोरकी शिरजोरी.

किसी बनियाँके घर रातको चोर घुसा उस-वक्त बनियाँ कहीं बाहरसे घर आरहाथा कि, उसने इस चोरको अपने घरमें घुसते देखलिया घर पहुँचतेही बनियाँने बाहर जंजीर चढ़ादी और पुलीसको बुलाने कुतवाली दौड़ा इतनेमें चोर तमाम घरका गहना रुपया पैसा इकाट्ठाकर और एक चिराग़ जला वहीं बैठरहा जब पुलिशवाले आये और किवाँड़ खोलकर भीतर गये तो इसे वहाँ बैठे देख उन्होंने पूंछा क्यों तू यहाँ क्या चोरी करने आया है ? चोर बोला कौन कहताहै? मुझे तो ये बनियाँ यहाँ बैठा गया था आज इसने हमारे साथ जुआँ खेला और यह सब मालियत जब हारगया तो मुझसे कहा कि, तुम यहीं बैठो मैं फ़लानी जगहसे कुछ रुपया लेआऊँ फिर खेलूँगा यह सुन पुलिशने उलटा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamwadi Math, Varanasi
Acc. No. 3968

बनियाँकोही गिरफ्तार किया "यहीहै चोरी और शिरजोरी."

६७—जूतियोंकी बदौलत.

एक भले आदमी मुशलमानने बहुतसे लोगोंका नेवता किया जब सबलोग खानेको आये उनमें एक महागँवार भी था. खाना खानेके बाद सब लोगोंने उस मुशल्मानकी बड़ी तारीफ़की और कहा आज आपने बहुत अच्छा खाना. खिलाया यह सुन वह मुशल्मान बोला " अयसाहबो ! यह सब आपही लोगोंकी जूतियोंके बदौलतहै " यह सुन वह गँवार जब घर चलनेलगा तो उस्के जूते न मिले तो मनमें यह कहता हुआ कि जूति-योंके बदौलत तो खानाखाया अब जूते कहाँसे मिलेंगे घरको चलदिया एक दिन इस्के भी मनमें यह बात आई कि आज मैंभी नेवता कर दूं ऐसा सोच उसने बहुतसे अपने मुशल्मान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाइयोंका नेवता किया जब सब लोग आकर घरभीतर बैठे तो उसने बाहर जो सबके जूते रक्खेथे एक गठरिया बाँध किसी जूतेवालेका दूकानपर लेजाकर बेंच उन्हीं दामकी मिठाई तुला सबोंको खिलादी जब सबलोग खा पी चुके तो सबके सामने खड़े होकर कहनेलगा आप लोग किसी तरहका ख्याल न कीजियेगा क्योंकि मैं किसी लायक नहींहूँ जो आपलोगोंको ऐसा खाना खिलाता पर ये सब आप लोगोंकी जूतियोंके बदौलतहै.

६८—समझदार.

एक धनी का यह दस्तूरथा कि जितने साधु वैरागी उस्के दरवाज़े पर आवें सबको यथोचित दानदिया करताथा और दान देतेसमय अपना शिर नीचे झुकालिया के एक दिन कहींसे एक साधु आया तो धनीने अपने दस्तूरके मुवाफ़िक़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसे भी नीचे शिर करके दान दिया. जब साधुने इस्का ऐसा हाल देखा तो उस धनीसे पूछनलगा.

दोहा ।

ऊच चंगुल देतहौ, नीचे करके नैन ।
कासों सीखी सीखना, ऐसी विधिसों दैन ॥

साधूका सवाल सुनकर धनीने उत्तर दिया—

दोहा ।

देनहार समरत्थहै, सो देहै दिन रैन ।
लोग नाम मेरा कहैं, तासों नीचे नैन ॥

६९—सम्पत्ति और विपत्ति.

एक दरिद्री आदमी शेठ दौलतचन्दके दरवाज़े पर गया और दरवानोंसे कहा कि शेठजीसे कहो तुम्हारा साढू तुमसे मिलने आयाहै. दरवानोंने शेठसे जाकर कहा कि शेठजी दरवाज़ेपर एक आदमी खड़ाहै और आपको अपना साढू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बतलाताहै यह सुन शेठजी भीतर शेठानीसे पूँछ-
नेगये क्यों तुम्हारी और कोई दूसरी बहिनहै?
शेठानी बोली "नहीं मैंतो अपने माँ बापकी
इकलौतीहूँ दूसरी मेरी बहिन कहाँ जन्मी कि
जिस्का पति तुमसे मिलने आयाहै" फिरशेठ दौल-
तचन्दने उस आदमीको अकेले एक कोठरीमें बुला
कर पूँछा कि तुम मेरे साढ़ू क्योंकर हो? उसनेकहा
"शेठजी! लक्ष्मीकी दो पुत्री हैं एक सम्पत्ति
और दूसरी विपत्ति सो सम्पत्ति आपको व्याही-
गई और विपत्ति मुझे व्याहीगई इस रिश्तेसे
आप मेरे साढ़ू ठहरे ऐसा सुन शेठजीने उस्का
बहुत आदर सत्कार किया किसीने सचकहाहै "
बातों हाथी पाइयाँ बातों हाथी पैर"

७०– बायाँहाथ.

एक साधू जब २ भोजन करने चौकामें बैठा-
करें तब २ अपना बायाँहाथ चौकेके बाहर कर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लियाकरें इनका ऐसाहाल देख किसीने इनसे पूंछा कि साधूजी इस्का क्या सबबहै जो आप भोजन करते समय बायाँहाथ चौकेसे बाहर कर-लिया करतेहैं ? साधूने जवाबदिया कि बायाँहाथ नापाकहै इसलिये उसे चौकाके बाहर रखना चाहिये इसपर उसने जवाबदिया " वाहजी! वाह!! जो नापाकीकी जड़है उसे तो चौकाके भीतर धरेहैं हाथ बाहर करनेसे क्या होताहै?

७१—लीकैलीक.

किसी मनुष्यके पुरुषे कंगालथे लेकिन् उस हालतमें भी अपनी सामर्थ्यभर साधु ब्राह्मणका सत्कार किया करें उनके लड़के बाले धन-वान्हुये परन्तु साधु ब्राह्मणको उतनाहीं दान दियाकरें जितना उनके पुरुषा दिया करते थे एकदिन किसीने उनसे कहा कि अब आप को अपनी सामर्थ्यभर दान करन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिये उसने जवाब दिया कि हम पुरुषों की रीति नहीं काटसक्ते यह सुन उस आदमीने जवाब दिया हाँ बहुत ठीक करते हो कमाने में तो रीति तोड़ी परन्तु देनेमें न तोड़ियेगा.

दोहा.

लीक लीक गाड़ी चलै, लीकै चलै सुपूत ।
तीन चीज़ बेलीककी, सायर सिंह कुपूत ॥१॥

७२—सूमकी चोरी.

एक सूमने अपने मित्रसे कहा कि इससमय मेरे पास एक हज़ार रुपया जमा होगयाहै सो इनको किसीठौर गाड़देना चाहिये और यह हाल मैंने तेरे सिवाय और किसी से नहीं कहाहै । मित्रबोला अच्छा ! चलो गाँवके बाहर कहीं गाड़देंगे ऐसा विचार दोनोंगाँवके बाहर उस धनको किसी पेड़के नीचे गाड़ आये. कईदिनके बाद एकदिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब सूम अकेला उस जगह गया तो वहाँ उस धनका नाम निशान भी न पाया तब उसने सोचाकि सिवाय मित्रके यह और किसीका काम-नहीं है क्योंकि और दूसरा तो इस हालको जान-ताही नहीं है इसपर उसने मित्रके घर आकर उससे कहा कि अब मेरे हाथ दोहज़ाररुपये और आगयेहैं सो यह मेरी कॉंक्षाहै कि इन्हेंभी उसी जगह गाड़ आऊँ इसलिये आपको कहने आयाहूँ कि कलके दिन मेरे घर आजाना । मित्र ऐसा हाल सुनकर रातको उसी जगह वही रुपया जो सूमका उखाड़ लायाथा गाड़आया । दूसरे-दिन सूम इस्के पहुँचनेके पेश्तर उस जगह गया और वह रुपया उखाड़ लाया और मित्रपरसे अपना विश्वास उठालिया.

७३—तीर्थमें स्नान.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एकयात्री गङ्गास्नान करने तीर्थराजमें गया तो

उसने प्रयागवाले पण्डासे पूँछा " महाराज ! इस तीर्थमें किसओर मुखकर स्नान करनेका फलहै" पण्डा बोला " यहाँ उसी ओर मुखकर स्नान करने का फल होताहै जिस ओर अपने वस्त्र रक्खे हों क्योंकि यहाँ डुबकी मारतेही कपड़े उठाजातेहैं"

७४—पक्काचोर.

किसी समय एक रानी गङ्गास्नान करनेको प्रयागराजमें गई. रानीके साथमें दो सिपाही ढाल तलवार लगायेथे और दोचार नौकर और लौंडियाँ थी जब रानी नहानेको जाने लगीं तो अपना तमाम सुनहली जेवर जो पहिरेथी उतारकर एक सन्दूक़में रख उसे एक सिपाहीको सुपुर्द किया और उसपर शख़्तताक़ीदकी कि तुम इस किनारेसे पलभरके लिये भी कहीं उठकर नहींजाना बाक़ी सब नौकरोंको साथ लेकर रानी नहाने गई और वह सिपाही घाटके ऊपर एकजगह उस सन्दूकपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ढाल उस्के ऊपर तलवार रख बैठगया. यह सब हाल किसी चोरने देखा और जेवर उड़ानेकी हिक्मत सोची थोड़ी देरके बाद वही चोर जरीके अच्छेर कपड़े पहिने हाथमें रेशमी रूमाल फटकारे और कुछ रुपयोंको बजातेहुये उस सिपाहीके साम-नेसे निकलगया । जब सिपाहीने इसे देखा तो अपने मनमें कहनेलगा देखो तो यह कोई बड़ा अमीरहै लेकिन् इस्के साथ कोई नौकर नहीं। थोड़ी देरके बाद फिर वही चोर उसी पोशाकमें वहींसे निकला और अब उसने रुपये पाकेटमें रख उस्में सुराख बनालियेथे जिसमेंसे रुपये बाहर गिरते जातेथे। जब सिपाहीने देखा कि उस्के पाकेटसे रुपये गिरतेजातेहैं तो उसे कुछ दूर निकल जानेदिया और आप खड़ा होकर चारों तरफ देखनेलगा कि. कोई आदमी क़रीब ा नहीं है जब उसे कोई नज़र नहीं पड़ा तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धीरेसे उठकर वह रुपया बीननेलगा इतनेमें ढालके नीचेकी सन्दूक् उड़गई। जब रुपया बीनकर आया तो ढाल तलवार अपनी ज्योंकी त्यों रक्खी पाई। जब रानी स्नान करके लौटी तब उनने वह सन्दूक् माँगी। ज्योंहीं ढाल उठाकर देखा तो छक्के छूटगये। तब रानीने हाल पूँछा उसने सब ज्योंका त्यों बयान किया रानी बोली जिसे तूने अमीर समझाथा वही चोरहै.

७८–जैसी करनी वैसी भरनी.

एक गड़ेरियेने कुछ भेंड़ें चुराई. जब पकड़ा गया तो बचनेके लिये अपनी ओरसे एक वकील नियत किया. वकील साहबने उसको यह हिकमत बताई कि जब तुमसे कचहरीमें कोई कुछ पूँछे तो भेंड़ोंकी बोली बोलना सिवाय इस्के और कुछ बोलनाहीं नहीं! ऐसा करनेसे हम तुम्हें साफ बचालेंगे! जब कचहरीमें इस्की पुकारहुई और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्यजिस्ट्रेटने गड़ेरियेसे पूँछा क्या ये भेंड़ें तूने चुराई हैं? गड़ेरिया बोला भेंभेंभेंभें" गर्ज़ जब २ म्यजिस्ट्रेटने उससे सवाल किये तबर वह "भेंभें" के सिवाय और कुछ नहींकहा ! तब उस वकीलने म्यजिस्ट्रेटसे कहा कि हुजूर यह भेंड़ोंमें रहा करताहै और पागल होगयाहै सिवाय "भेंभें" के और कुछ बोलही नहीं सक्ताहै ! यहसुन म्यजिस्ट्रेटने गड़ेरियेको छोड़दिया ! जब गड़ेरिया और वकील दोनों घरआये और वकीलसाहबने जब उससे अपना मिहनताना माँगा तो उसने इनकोभी "भेंभें" के सिवाय और कुछ उत्तर नदिया ! दूसरेदिन वकील साहबने उसी गड़ेरिये पर मिहनतानेके रुपयाकी नालिश उसी म्यजिस्ट्रेट के पास धमक दी जब कचहरीमें पहुँचे तो म्यजिस्ट्रेटने वकीलपर यह सवाल किया कि जिस मुकद्दमे के मिहनताने की तुमने इसपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़्वाहिशकीहै उसी मुक़द्दमेमें तुमने इसे पागल बनाया है फिर तुम्हारा मिहनताना किससे दिलाया जाय इसलिये यह मुक़द्दमा तुम्हारे तमसीलके मुताबिक़ खारिज किया जाताहै.

७६–अड़ियल नौकर.

एक लाला साहब और उनका एक नौकर बरसात के मौसम में किसी कोठेमें पड़ेथे. लाला साहबने नौकर से कहा "बाहर जाकर देखो पानी तो नहीं बरसता है?" नौकर ने वहीं पड़े२जवाब दिया "हाँ बरसताहै" लालाने पूँछा तू क्योंकर जाना? उसने जवाब दिया एक बिल्ली आई थी उसे मैंने टटोलाथा तो भींगीथी।थोड़ीदेरके बाद लालाने फिर नौकर से कहा कि चिराग़ बुझादो नौकरने फिर पड़े २ जवाबदिया कि कपड़ा मुँहपरसे ओढ़ लीजिये बस समझिये कि चिराग़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुझगया अंधेरा होजायगा फिर थोड़ी देरके बाद लाला साहबने कहाकि अच्छा उठकर किवाड़े तो बन्द करदो नौकर बोला साहब दो काम तो मैंने करदिये अब एककाम आपही करलीजिये.

७७-ईश्वरकी ईश्वरता.

एक राजा जेठकी दुपहरी में जबकि छाँह भी छाँह ढूँढ़तीहै किसी कार्य्यवश एक जंगलमें जा पहुँचा तो वहाँ उसे एक भिल्लनी शिरपर लकड़ियोंका बोझधरे मिली ! वह वहाँसे थोड़ी दूरगई होगी कि उसे एक लड़का पैदा हुआ उस भिल्लनीने उस लड़केको पीठसे एक कपड़े में बाँध शिरपर वही लकड़ियोंका बोझ रख अपने घरकी राहली। राजाने उस्का यह सब हाल अच्छीतरह देखा और घर आकर अपने प्रधानमन्त्रीसे जो चरित्र देखाथा कह सुनाया कि देखो एक वहभी स्त्रीहै और एक हमारे रनिवासकी देखो इतनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़बरदारी लेनेपर भी हररोज़ नई २ व्याधियाँ सुननेमें आतीहैं। मन्त्री बोले आपका कहना ठीकहै क्योंकि गुसाँई श्रीतुलसीदासजीनेभी इस विषयमें कहाहैः—

दोहा.

तुलसी बिरवा बाग़के, सींचतही कुँभलाय।
रामभरोसे वेरहैं, पर्व्वतपर हरिआय॥

७८—दुष्टप्रकृति.

एक मनुष्य अपने परोसीके गधेको रातभर कोसता रहाकि परमेश्वरकरे इस्का गधा मरजाय जब सबेरे उठा तो क्या देखताहै कि "अपनाहीं बैल मरा पड़ाहै यह देख वह आश्मानकी तरफ शिरउठाकर कहनेलगा" क्याखूब! इतने वर्ष इस जमीनपर राज्यकरते होगये अभीतक ईश्वरको बैल और गधेकी पहिचानतक नहुई.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

७९–अफीमचीसाईस.

एक अफीमची साईस जो अफीममें डूबारहताथा एक रईशके यहाँ नौकर हुआ और रईशके आज्ञानुसार दिनरात घोड़ेको मलतारहै. अचानक एकदिन घोड़ा खुलकर भागगया. जब साईस घुड़शालमें आया तो उसे टटोलताथा कि उसी समय एकगधा थानमें आघुसा टटोलते २ उस्का हाथ गधेपर जापड़ा सोचा कि यही घोड़ाहै उसे पकड़ थानमें बाँध दिया और पहलेकी तरह खुरहरा करनेलगा। इस्के कुछ देरबाद रईशको कहीं जानेका मौका हुआ तो घोड़ेको कसकर लानेका हुकुमदिया ! साईस गधेपर जीनकस कर रईशके रूबरू लेगया अमीरने जब घोड़ेकी जगह गधेको देखा तो बहुत नाराज़ होकर कहनेलगा " अय नामाकूल यह घोड़ा नहीं गधाहै" साईसने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जवाब दिया कि हुजूर यह गधा नहीं है मलते २ घोड़ेका खुलाशा (संक्षेप) रहगयाहै.

८०—कपूरचन्द.

किसी स्त्रीके पतिका नाम कपूरचन्द था एक-दिन उस स्त्रीकी सासने उससे कहा कि बाज़ारसे एकपैसेका कपूरलेआ। वह स्त्री बाज़ारमें जा बनि-येंसे यह दोहा कह अपनी सौदा माँगनेलगी.

दोहा.

शंख सरीखी ऊजरी, कालिमिर्च सहवास।
सौदा दीजे बानियाँ, मँगा पठाई सास॥

बनियेने उक्त सौदा न समझ उसे यह दोहा कहा—

दोहा.

गोरी तीनसौ साठ थालया धरीं तुम्हारे पास।
चातुर होतो चीन्हलेहुनाहिं, भेजो अपनी सास।

यह सुन वह स्त्री फिर कहनेलगी:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोहा.

शंखसरीखी ऊजरी, सब बासनमें बास ।
जल्दी दीजै बानियाँ, गुसाहोयगी सास ॥

यहसुन बनियेंने उस्का मतलब समझ उसे सौदादे बिदाकिया.

८१-अंगूरकी चोरी.

एक आदमी किसी बागीचामें अंगूर चुराने की इच्छासे गया जब बागवानने उसे देखकर ललकारा और कहा क्या करताहै तब उसने कहा पाखाना फिरता हूँ । यहसुन बागवानने कहा कि बता कहाँ पाखाना फिराहै? उसने गोबर उठाकर दिखादिया यहदेख बागवान बोला अरे बैल ! यहतो गायका गोबरहै तेरा पाखाना नहीं मालूम होताहै । उसने जवाब दिया कि जब तूने ललकारा तो मैं डरकर आदमियँतसे न पाखाना फिरसका गाय बैलकी तरह पाखाना होगया.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

८२–विलायती हिक्मत.

विलायतके बायना शहरमें एक शाहजादीने एक अस्पतालकी सहायतामें मीनाबाज़ार सजाया ! वहाँ एकदिन एक धनाढ्य अँगरेज़ आया वह जितना धनीथा उतनाहीं सूमभीथा उसने दूकानपर जो नाना प्रकारकी चीजें देखी परन्तु कुछ लेनेका इरादा न किया तब वह शाहजादी उस धनाढ्य मनुष्यके पास आई और अति चंचलतासे हँसकर एक चुरुटकी सन्दूक भेंटकी ! उस सूमने कहा मैं आपका बाधितहूं मैं चुरुट नहीं पीता तब उस शाहज़ादीने कलमें उठाकर उसे देनेको हाथ पसारा कि फिर वह बोला मैं कभी लिखतानहीं फिर शाहज़ादीने उम्दा मिठाई दिखलाई जिसे देख वह बोला कि मैं मिठाई नहीं खाताहूं ! इतने पर उस शाहज़ादीका क्रोधसे रंग बदलगया। पर शांत होकर कुछ न कहा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और साबुनकी टिकिया उठाकर दिखलाई और कहा मुझे देते तो भय होता है क्योंकि तुम कहोगे कि मैं कभी मुँह नहीं धोता हूँ यह सुनते ही वह वहाँ से भागा कि और २ लोग जो वहाँ थे खूब कहकहा लगाया। पर उसने लौटकर शाहज़ादी की दूकानका सबमाल मुँह माँगे दामोंपर खरीद लिया.

८३-आदमीका गधा.

एक स्कूलके कई लड़के दोपहरके समय नगरकेबाहर घूमने गये जब कुछ दूर निकलगये तो एक धोबी को एक पेंड़के नीचे सोते देखा। एकगधा कपड़ोंसे लदा उसी के पास खड़ाथा इन्हें देख एक लड़का बोला आवो आज एक तमाशाकरें। इसपर उसने और लड़कोंसे कहा कि ये जो कपड़े लादी है सो मेरी पीठपर रखदो और तुमलोग इस गधे को बाजार में लेजाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बेंचडालो। उन्होंने उस्के कहने के मुवाफ़िक़ किया और वह लड़का अपनी पीठपर कपड़े लादे गलेमें उसी गधेकी रस्सी बाँधे चारोंहाथ पैरोंके बल वहीं खड़ा रहा। जब थोड़ी देरके बाद धोबी उठा तब वह अपनी गधे की जगह में एक लड़के को देख बड़ा अचम्भित होकर बोला "अरे क्यातू गधेसे लड़का बनगयाहै?" लड़का बोला "हाँ" फिर धोबीने पूंछा "इस्का क्या सबबहै?" लड़के ने जवाबदिया मेरा बाप बड़ा जादूगरहै एकदिन मुझसे कशूर बनपड़ा इसलिये जब २ उस्के मनमें क्रोध उपजताहै तब २ जो २ उस्के जीमें आताहै बनादेताहै कभी कुत्ता बनाताहै कभी बिल्ली कभी गधा और कभी शेरभी बना-देताहै। धोबी शेरका नाम सुनतेही हक्का बक्का होगया और इससे कहने लगा अच्छा जहाँ तेरे मनमें आवे वहाँ चलाजा मैं और दूसरागधा खरी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दलूँगा यह लड़का वहाँसे चल अपने साथियोंमें आमिला और धोबी दूसरा गधा लेने बाज़ारमें गया तो उसे वही गधा बिकाऊ मिला वह उसे अपना पुराना गधा समझ उससेपूंछनेलगा "क्यों बे! अब तू फिर गधा बनगया ?"

८४–गधेका आदमी.

किसीदिन अकबर बादशाहने बीरबलसेकहा "ऐबीरबल! मुझे हिन्दू बनाले! बीरबल बोला बहुत अच्छा! लेकिन् कुछ थोड़ीसी मुहलत मिलनी चाहिये. यहसुन बादशाहने कुछ मुहलत दी। जब बीरबल अपने घरआया तो बड़ी फ़िक्रमें पड़ा यहाँतक कि खाना पीना छोड़दिया। एकदिन बीरबलकी लड़कीने बीरबलसे पूंछा" बाबाजान! आजकल तुम्हारी तबीअत कैसी रहतीहै? मैं कई दिनसे देखतीहूं कि तुम खानाभी बहुत कम खातेहो" बीरबलने पहलेतो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछनहीं बतलाया लेकिन जब लड़की जिद्दकर पूछनेलगी तो कहा बादशाहने मुझसे कहाहै कि मुझे हिन्दूबनालो और उससमय मेरे मुँहसेभी निकलआई कि अच्छा बनालूँगा सो अब मुझे कोई तदबीर नहीं सूझती. लड़की बोली "बाबाजान! यह कौनसी बड़ीबातहै म अभी बादशाहको हिन्दू बनाके आतीहूँ आप चिन्ता न कीजिये" ऐसा कह कर वह शिरसे पैरतक सुनहली गहना पहिन और एकगधेको पकड़ ले चली और जहाँ बादशाह दरियाके किनारेके महलमें बैठेथे उसीमहलके नीचेके घाटपर उसी गधाको खड़ाकर एक पत्थरसे उसपर पानी डाल २ घिसने लगी। जब धोते २ दोपहरतक उसे धोया और बादशाहनेभी उसे उसवक़ तक धोते देखा तो वहींसे बैठे २ उस लड़कीसे पूँछा "ऐ" नाज़नीन! आज ये तू क्या कररहीहै? तू किसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भले आदमीकी लड़की होकर बड़ी देरसे इस गधेको नहलारहीहै सो इस्का क्या सबबहै ? तब लड़कीने बादशाहसे कहा "हुजूर ! अबतक मेरी शादी नहीं हुईहै जब पण्डितोंसे पूंछा उन्होंने इसी गधेको बतलाया और कहा इसे खूब मल २ के नदीमें धोओ जब यह आदमी होजायगा तब तेरी शादी इस्के साथ होगी" यहसुन बादशाह बोला "अय अक्ककी दुश्मन ! कहीं गधेकाभी आदमी हुआहै ?" तब बीरबलकी लड़की बोली "हुजूर ! कहीं मुशल्मानसेभी हिन्दू हुआहै."

८५-उद्योग और प्रारब्ध.

दो मनुष्य एक उद्योगको बड़ा कहने वाला, दूसरा प्रारब्धको बड़ा कहनेवाला किसी मनुष्यके पास झगड़ते २ अपना न्याय चुकानेके लियेगये। उस मनुष्यने इन दोनोंको अलहदा २ कोठरीमें बन्द करदिया। जो प्रारब्धको बड़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहता था अपने मनमें यह कहताहुआ कि जो कुछ होनेवालाहै होगा तान दुपट्टा सोरहा और जो उद्योगीथा अपने मनमें यह कहनेलगा कि कुछ उद्योग अवश्य करना चाहिये नहींतो भूखों मरजाँयगे इसने ऐसा सोच किसी तदबीरसे दीवा-लमें छेद किया और उसी रास्तेसे निकल कहींसे खाना लाया आप खाया और अपने साथीको यह बतलानेके लिये कि मैंने उद्योगसे खाना लायाहै खाना लेगया उसे जगाकर खिलाया और कहा देखो हमारा उद्योग बड़ाहै या तेरा प्रारब्ध? उसने जवाबदिया तुझेतो उद्योग करनेसे मिला परन्तु मेरीतो प्रारब्धने पहुँचाया इससे प्रारब्ध बड़ाहै.

८६–उचित न्याय.

किसी रास्तेसे दो गाड़ियाँ बराबरसे चली जारहीथीं कुछ दूर जाते २ रस्ता कमचौड़ी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिर्फ एकही गाड़ी निकलने लायक मिला यह देख दोनों गाड़ीवान् आपसमें झगड़नेलगे एक कहे मैं अपनी गाड़ी आगे लेजाऊँगा दूसरा कहे मैं अपनी आगे लेजाऊँगा। इत्तिफ़ाकसे एक आदमी इनको झगड़तेहुये देख इनसे पूँछने लगा उन्होंने अपना हाल बतलाया इसपर उस आदमीने दोनों गाड़ीवानोंसे पूंछा तुम दोनोंअपनी२ गाड़ीका सामान बताओ कि किसमें क्या भराहै? एकने कहा मेरी गाड़ीमेंतो डाक्टर साहबकी दवाई वग़ैरहहै दूसरा बोला मेरी गाड़ीमें क़बरिस्तानके पत्थरहैं यह सुन वह आदमी बोला अच्छा पहिले डाक्टर साहबकी गाड़ी चलनी चाहिये क्योंकि जब आदमी दवाई खाँयगे तभी क़ब्र बनानेमें पत्त्थरोंकी ज़रूरत पड़ेगी.

८७—मशालअली.

किसी जुलाहेके लड़केका नाम चिराग़अलीथा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इल्म हासिल करनेसे एक अच्छे ओहदेपर पहुँचा तो किसी एक उस्के जातवालेने उस्को ऐसी पदवी पर पहुँचाहुआ सुनकर उससे मुलाक़ात करनी चाही और उस्के पास पहुँचकर सलाम व लामकर बैठगया। थोड़ीदेरके बाद आपही आप कहने लगा " शुक्रहै उस पाक परवर्दिगारका जिस्के फ़ज़लसे आप इस ओहदेपर पहुँचे अब जो आपको चिराग़अली कहे वाकी बिटियाकेर अस...अब आप साहब केर नाम मशालअली भयेल अब सरकार गदहाहैं हम सब सरकारकी दूबहैं सरकार खोंटब हम न बढ़ब अब सरकार कूकर भइन हम सबन वनकी हरिणी हैन सरकार रगेदीं हम न भागब.

८८—घी खानेवाले.

दो आदमी आपसमें एक दूसरेसे पूँछनेलगे कि तुम कितना घी खातेहो एकबोला भाई ! मैंतो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक पैसेका घी सालभर खाताहूँ दूसरेने पूँछा कि किसतरह खाताहै वह बोला एक शीशीमें बनियाँके यहाँसे एक पैसेका घी लाताहूँ जब कोई तरकारी खिचड़ी या दाल पकाई तो उस्में घीकी शीशीको घुसेड़ देताहूँ जब रोटी खाई तब उस-मेंसे थोड़ा लेकर मूछोंमें लगा लिया करताहूँ जिससे लोग समझें बहुत घी खाताहै ! यहसुन दूसरा कहने लगा तुम हमारे सामने कुछभी नहीं खाते देखो हम इसतरह घी खातेहैं जब रोटी पकाचुके तो थालीमें परोस घीकी मंडीके तरफ़ मुँह करके बैठतेहैं जब एक कौर उठाया कि यह कहतेहुये उसे खाजातेहैं कि ये रोटी और वह घी.

५९—दमड़ीकी हिकमत टका बताई.

किसी आदमी के पेटमें दर्द उठा उसने एक वैद्यसे जाकर कुछ दवा माँगी। वैद्यने कहा जा बनियेंकी दूकानसे एक दमड़ी की अजवायन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेकर खालेना तो अच्छा हो जायगा। वह बोला वैद्यजी ऐसी कोई हिकमत बतादो जिस्में बनियां से दमड़ी की अजवायन खरीदना नपड़े और कामभी चलजाय। क्योंकि जब उस्के यहाँ हम दमड़ी की सौदालेने जाँयगे तो शर्म मालूम होगी वैद्यजीने कहा अच्छा एक टका लाओ तो हम तुमको हिकमत बतादेंगे उसने चट एक टका निकाल वैद्यजीको शुपुर्द किया तब वैद्यजी बोले किसी बनियाँकी दूकानपर जा और उससे कहना भाई बनिये मेरी औरत के लड़का हुआ है सो मुझे रुपया दो रुपया की अजवायन खरीदना है यदि तू मुझे बानगी देवे तो मैं अपनी घरवाली को दिखालाऊँ. वह एक बनियेंकी दूकानपर गया और उसी तरहपर सब बातें कही। बनियाँने एक मुट्ठा अजवायन उठाकर उस्के हाथ में दियाकि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जा दिखलाआवो । उसने जितनी अजवायन वैद्य खानेको बतलाई थी उतनी खा बाकी फेंक घरकी राहली.

९०—विना विचारका काम.

एक मनुष्यने एक नेवला पालाथा। एक दिन वह मनुष्य किसी कामके लिये कहीं बाहर चला-गया और घरमें सिर्फ उस्की स्त्री और एक छः महीनेका बालकथा एकदिन वह स्त्री घरके भीतर लड़केको सुला और उस नेवलेको उसीके पास बैठा आप पानी भरनेको बाहर चलीगई। इत-नेमें कहींसे एक कालासाँप आया और उस बच्चेके पलँगके पास काटनेको चढ़ाजाताथा कि नेवला उसे देख उसपर झपटा और कुछ समय-तक दोनोंकी लड़ाई होतीरही इतनेमें नेवलेने साँपको मार उस्के टुकड़े २ कर जहाँ तहाँ घर-भरमें खूनही खून करदिया और दरवाज़ेपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आबैठा जब वह स्त्री पानी भरकर लौटी तो नेवलेको दरवाज़ेपर बैठे अपना मुँह पोंछते और उस्के आस पास खून पड़ा देख समझी कि नेवलेने बच्चेको मारखाया ऐसा सोचतेही उसने अपने शिरका घड़ा नेवलेपर देमारा जिससे नेवलेके प्राण निकलगये और आप चिल्ला २ रोने-लगी कि नेवलेने बच्चेको मारखाया। जब भीतर जाकर देखतीहै तो बच्चा आनन्दसे सोरहाहै और उसीके पास साँपके कई टुकड़े और खून पड़ाहै तबतो मनमें विना सोचे किये कामपर पछताने लगीकि नेवलेको मैंने नाहकविना कुसूर मारडाला।

दोहा.

विना विचारे जोकरै, सो पाछे पछताय ।
काम बिगारै आपनो, जगमें होतहँसाय ॥

९१—पुरानी सज़ा.

एक बनियेंको कि[illegible] अपराधके कारण गधेपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चढ़ा तमाम शहर घुमानेकी आज्ञाहुई जब उस्की सज़ा होगई तो वह अपने घर आकर बहुत शर्मिंदाहुआ और आत्महत्या करनेपर उतारूहुआ मुहल्ले पड़ोसके लोग समझाकर थकगये इतनेमें एक कवि आये और उनने यह कवित्त सुनाकर उस्की चिन्तादूरकी.

कवित्त.

जा गदहाचढ़ि रूमको शाह निमाज़ गुज़ारने ईदको आयो।जा गदहाचढ़ि शुक्र शनिश्चर तीनहुँ लोक प्रताप बढ़ायो ॥ जा गदहाचढ़ि दूरगा देवि प्रचंड भई महि बीच थपायो।आपनो भाग सराहरे बानियाँ जो गदहा चढ़बो कहँपायो ॥ १ ॥

९२—नाईकी बातकी सफ़ाई.

एक नाई अपने यजमानके द्विरागमनमें उनके साथगया। समधीने इन सबके लिये भोजन बनवाया। जब नाई भोजन करनेगया तो इस्के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाँतके नीचे कंकरके टूटनेकी आवाज़ सुनकर समधी विचारा अपने घरकी स्त्रियों की असावधानीपर लज्जित होताहुआ बोला कि क्या खवासजी कंकरहैं? नाईने जवाबदिया कि नहीं जन्मदाता कोई २ चावलभीहैं.

९३--बहाना करना.

एक दिन एक मनुष्य अपने किसी पहिचानके एक अमीरके घरगया और दोदिनके लिये उस्का घोड़ा मँगनी माँगा। उस अमीरने उज्रकिया कि घोड़ा घरमें नहींहै फ़लाना आदमी मँगनी लेगया है। इतनेहीमें घोड़ा जो घुड़शालमें बँधाथा हिनहिना उठा। तब उस माँगनेवालेने कहा देखिये साहब! घोड़ातो आपका घरहीमें बोल रहाहै अमीरने उत्तरदिया " वाह साहब आप घोड़े की बोली तो समझतेहैं लेकिन् आदमीकी नहीं " तब वह मनुष्य अपनासा मुँह लिये घर चलाआया.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

९४-चोरको गँठकट्ट.

एक चोर किसीका कुछ कपड़ा चुरालाया और बाज़ारमें उसे बेंचने गया वहाँ उसने किसी दलालके हाथ वह कपड़ा देकर कहा इसेभी बेंचदो । इतिफ़ाक़से वहाँ कोई उचक्का पहुँचा और दलालके हाथसे वह कपड़ा लेकर चलदिया । जब चोर खालीहाथ अपने मित्रोंमें आया तो उन्होंने पूँछा " क्यों ! कपड़ा कितनेमें बेंचआये ? " चोरने जवाब दिया जितनेपर लायेथे उतनेहीपर देआये कुछ नफ़ानली.

९५-खूबकहा.

एक क़र्ज़दारने जो किसी महाजनकी इजराय डिगरीमें क़ैदथा उसके पास यह संदेशा भेजा कि मैंने क़र्ज़ अदा करनेकी एक बहुतही उम्दा तदबीर सोचीहै जिससे आपके रुपयोंकी अदाईकी सूरतहै और मुझेभी फ़ायदाहै । महाजन उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क़ैदीकी तदवीरका हाल सुननेगया तो उसने कहा "मैं सोचताहूँ कि मेरे लिये यह बड़े शर्मकी बातहै कि एकतो मैं आपका उतना रुपया खाये बैठाहूँ और अब यहाँ पड़ा हुआ दोआने रोज़ आपका खाताहूँ न मालूम इसतरहसे आपका कितना ख़र्च मेरे शिरपरहो। इसलिये जो तद-बीर मैंने सोची है वह यह है कि आप मुझे क़ैदसे छुड़वादें और चार रुपया महीनाके बदले शिर्फ दो रुपया महीना मेरे ख़र्चकोदें और बाक़ी दो रुपया माहवारी क़िस्त की तौरपर क़र्ज में काटते जाँय.

९६—समझकी बात.

किसी धनीके चार लड़के थे जब वह मरने लगा तो उसने अपने चारों लड़कों को बुलाकर चारचीज़ेंदी।एकको एक टुकड़ा काग़ज़, दूसरेको एक टुकड़ा धातु, तीसरेको एक टुकड़ा हड्डी और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौथेको एक ढेला मिट्टीका दिया और कहा तुम लोगोंका हिस्सा इसी तौरपर बाँटा जायगा। जब वह धनी मरगया तो इन चारों लड़कोंने अपना२ हिस्सा बाँटना चाहा लेकिन उसतरहका जिसतरह उनका बाप कहगयाथा बँटवाही नहीं सकताथा। आख़िरमें उनका हिस्सा इसतरहपर कियागया जिस्को काग़ज़का टुकड़ा दियागयाथा उस्को वह रुपया जो खाते बही या दस्तावेज़ोंमेंथा दियागया। जिसे धातुका टुकड़ा दियागयाथा उसे कुल नक़दी वा ज़ेवरात और कुल धातुओंका सामान दियागया तीसरेको जिसे हड्डी दीगईथी उसे कुल जानवर हाथी घोड़े आदि दियेगये और चौथेको जिसे मिट्टीका ढेलदियागयाथा उसे कुल ज़मीन गाँव और मक़ानात वग़ैरह दिये गये.

९७—चौबेकी बात.

एक चौबेजी किसी अटारीपर पेशाब करर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैथोकि नीचे किसी राहगीरपर छींटे आपड़े। उसने चिल्लाकर कहा "अटारीपर कौनहै कैसापानी फेंकताहै ?" चौबेजीने उठकर जवाब दिया "भइया! यह पानीतो यमुना मइयाका सुन्दरजलहै पर एकघड़ी पेटमें रहचुकाहै."

९८–लालाजी और पुरोहित.

लालाजी–कहिये पुरोहितजी ! आपनेतो ठीक सातबजे बरात निकालनेका लग्नदियाथा पर अभी हमारी बरातको सजते २ लगभग दोघन्टे लगेंगे तब काहिये लग्न कैसे बनेगा ?

पुरोहितजी–कुछ चिन्ता नहीं ! जब आपकी घड़ीमें सात बजनेको पाँचमिनट बाक़ीरहें तब आप उसे बन्द करदीजियेगा और जब आपकी बरातकी सजावट होजाय और आपलोगभी बिल्कुल चलनेको तय्यार होजाँय तब घड़ीको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चलादीजियेगा बस पाँचमिनट बाद जब ठीक सातबजें तब बरात निकालियेगा लीजिये लग्नभी बना और बरातभी सजी.

९९—बेसुरी तान.

किसी ठाकुरमन्दिरमें बहुतसे लोग गाते बजातेथे अचानक वहाँ एक योगी खँजरीलिये आनिकला और उन सबोंका गाना बन्दकर आप आपनी बेसुरीतान अलापनेलगा उस्के गा चुकने पर लोगोंने कहा" बाबाजी ? तुम्हारे गानेसे कोई न रीझा" योगीने कहा "रीझो या नरीझो मुझेतो ठाकुरको रिझावनोहै" वहाँ एक चौबे बैठेथे बोल उठे"सारे मोकूं तो रिझायही नाँय सक्यो ठाकुर का मोहूँते क्रूरहैं ?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१००—शागिर्दकी हिकमत.

एक मनुष्य वकालतके इम्तिहानके लिये तय्यारी कररहाथा इसलिये वह एक उस्तादसे मन्तिक पढ़ना शुरूकिया और पाँचसौ रुपया उस्तादको देनेका अक़रारकिया जिस्मेंसे आधे रुपये पेशगी देदिये और बाक़ीकी निस्बत यह शर्तकी कि वकालतकी सनद पाकर जिसवक़्त अव्वल मुक़द्दमा जीतूँगा उसीवक़्त अदा करूँगा ! इस शर्तपर मन्तिक पढ़कर हज़रत वकालतके इम्तिहानमें कामयाब होगये मगर मुद्दत तक नतो अदालतको गये और न उस्तादके सामने आये ! जब उस्तादने देखा कि इन हज़रतकी नियत बाक़ी रुपया देनेकी नहीं है तो नालिश करदी । जब अदालतमें इजहार देनेके वक़्त मुक़ाबलाहुआ तो उस्ताद बोले कि बचा रुपया तो तुमसे मैं हरसूरत में लूँगा अगर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैं जीता तो अदालत दिलवादेगी और तुम जीते तो तुम्हें शर्तके मुवाफ़िक़ देना पड़ेगा क्योंकि अव्वल मुक़द्दमा जीतनेपर रुपया अदा करनेका तुमने वादा कियाहै । शागिर्दने जवाबदिया "उस्ताद! मैं आपको एककौड़ी नहीं देसक्ताहूँ हर-सूरतमें मेरीही जीतहै-अगर मैं जीता तो आपको अदालत नदिलावेगी और हारा तो शर्तके मुता-बिक़ न दूँगा क्योंकि शर्ततो यहहै कि जीतूँ तो दूँ नकि हारूँतोदूँ । वाह!वाह!! उस्ताद जो आफ़तहै तो शागिर्द ग़ज़बहै.

१०१-उधरहीसे होताआवे.

एक मजलिसमें बहुतसे लोग एकसे एक तक-ल्लुफ़में बढ़कर बैठेथे ! नौकर हुक्का भरकर लाया और एक शिरसे पूँछना शुरूकिया । पहलेने दूसरे शख्सकी तरफ इशारा करके कहा कि किबला ! पहले आप नोश फ़रमाइये उन्होंने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जवाबदिया कि क़िबला ! पहले उधरहीसे होता-आवे । इसीतरह नौकर तमाम घूम आया सबने अपने नज़दीकके साहेबकी तरफ़ इशारा करके कहा कि क़िबला पहले उधरहीसे होता आवे । नौकर तंगहोकर बीच मजलिशमें बैठकर हुक्का पीनेलगा मालिकने खफा होकर नौकरपर गुस्सा जाहिरकिया और हुक्मदिया कि इस बेअदबको दशजूते मारो । नौकरने साहिबान मजलिशकी तरफ़ इशारा करके मालिकसे कहा कि क़िबला ! पहले उधरहीसे होता आवे.

१०२--बकुला भगत.

किसी पण्डितने एकबड़े तिलकधारी बकुला-भगतसे पूँछा कि तुमने इतने दिनोंतक कथा सुनी क्या समझा ? आप बोले "महाभारतका सार यहहै कि मरजाना पर सुईभर ज़मीनको नदेना, रामायणका फल यहहै कि सर्व्वनाश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होजाय पर स्त्री नहीं छोड़ना । रही भागवत उस्का अर्थ यहहै कि मद्यपान करके आपसमें कटजाना "। पण्डितजीने हँसकर कहा धन्यहै तेरीबुद्धि ! तभी न भारतकी यह दशाहै.

१०३–उमरका हिसाब.

विलायतका " वर्ल्ड " अखबार लिखताहै कि एकमेम साहिबा लोगोंको बड़ी चालाकीके साथ अपनी उमरका हिसाब समझाकर अपने सिनको हद्दसे ज्यादा घटारहीथी । उनकी लड़की निहा-यत हाज़िर जवाबथी उससे नरहागया वह बातको काटकर बोल उठी " अम्मा ! भला अपनी और मेरी उमरमें कमसेकम नौ महीनेकाभी तो फ़र्क छोड़दो ?

१०४–खीर खाओगे.

एकमनुष्यने एक अन्धेसे पूँछा कि तुम खीर खाओगे ? उसने कहा " खीर कैसी होतीहै "कहा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

" श्वेत होतीहै" फिर अन्धे ने उससे पूंछा " श्वेत कैसाहोताहै? " तब उसने कहा " जैसा बगला" अन्धे ने पूँछा "बगला कैसाहोताहै? " उसने अपना हाथ टेढ़ाकरके कहा ऐसा होताहै। अन्धे ने कहा ऐसी खीर न खाऊँगा कण्ठ में अटकजाय तो मर जाऊँगा.

१०५—चाकरकी इज्जत.

एक मनुष्य रोगी था उसने अपने नौकरसे कहा कि अमुक वैद्यके पास जाकर औषधला। उसने कहा " जो वैद्यजी इस समय घरमें नहोवें?" कहा होवेंगे ? तब उसने कहा यदि होवें और औषध नदेवें ? तब कहा मेरा पत्र लेजा अवश्यदेंगे। फिर उसने कहा यदि ओषधिभीदें पर गुण नकरे? तबतो वह मनुष्य क्रोधितहो बोला " अय ! अभागे यहीं बैठे बातें बनाया करोगे वा जाओगेभी? वह बोला " महाराज ! मैंने माना जो गुणभी करे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो लाभ क्या? निदान एकदिन मरना सत्यहै। जैसा अब मरे तैसा तब। यह सुनकर वह मनुष्य बोला गुसाँईने ठीक कहाहै.

दोहा:—

उरग तुरग नारी नृपति, नर नीचो हथियार।
तुलसी परखत रहब नित, इनहिं न पलटतबार॥

१०६—उम्मैदवार.

एक आदमी एक अमीरके यहाँ उम्मेदवारीमें हाज़िर रहताथा! आप उनको बराबर विश्वास देतेरहे इसीमें अर्सा गुज़रा! वह विचारा अपना सर्वस खागया यहाँतक कि बदनका कपड़ाभी चिथड़ा होगया पर कुछ काम न मिला एकरोज़ डेवड़ीपर कोई प्यादा न था हज़रतको अन्दर जानेकी ज़रूरतहुई तो उसी म्उमैदवारको फ़र्माया किभाई!तुम ज़रा डेवढ़ीकी होशियारी रक्खो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैंआताहूँ!इतनेमें एक पागल नंगा भीतर घुसगया! इस्का दिलतो बिगड़ाहीथा कुछ न बोला भीतर जाने दिया।यह अचम्भादेख हज़रत ख़फ़ा होके पगलेको धकियातेहुये बाहर आके उम्मदवारसे बोले "क्या तू अन्धाहै ?" वह हाथ जोड़के बोला हुजूर मैंने जाना कि यह आपके बापके वक़्का उम्मेदवारहे । क्योंकि मैं आपके वक़्काहूँ सो तो कपड़ा लत्ता बेच दिवालिया होगया तो आपके बापके वक़्के उम्मैदवारको नंगा होनेमें क्या अचम्भाहै । यह सुनकर विचारे लज्जित होगये.

१०७–अनुमानसे बताना.

एक बूढ़ा मनुष्य रास्ता भूलगया गाँवकें किसी छोकरेसे पूंछा "अय ! नेकबख़्त लड़के ! शहरका कौन रास्ताहै ?" लड़का बहुत चाला-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कथा पूँछनलगा कि रास्ता तो पीछे बताऊंगा पहले आप यह फ़र्माइये कि आपने मुझे नेक-बख्त क्योंकर समझा ? बूढ़ेने कहा अनुमानसे लड़केने क्या ठीक जवाब दिया कि फिर रास्ताभी अनुमानहीसे मालूम करलीजिये.

१०८–गँवारकी बात.

एक गँवार का लड़का बीमार था और उस्को दस्त नहीं होता था वैद्यजी वहीं पर बैठे थे उस गँवार ने कहा कि यदि इस्को दस्तहोय तो मैं आपको भोजन करादूँ इसबातको सुनकर कई आदमी जो वहाँ बैठे थ हँसपड़े और वैद्य विचारे भी लज्जित होकर चलदिये.

१०९–मारवाड़ी अक्षरका दोष.

एक कोठीवाल ने आगरे से अपने घरवाले को लिखाकि लाला जी अजमेर गये बड़ी बहीको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेते आना। जब यह ख़त उनके घरपर आया तो (मात्रा न रहनेके कारण) लोगों ने पढ़ा कि लालाजी आज मरगये बड़ीबहूको लेते आना। यह खबर सुनकर लोग बड़े चिन्तामें हुये और शीघ्रही बड़ी बहूको आगरे भेज-दिया। वहाँ जानेपर उसने पूँछा कि यहक्या! सबोंने कहा कि आपही ने लिखाथा कि लालाजी आज मरगये बड़ी बहूको लेते आना। यह सुनकर वह विचारे लज्जित होगये और जितने आदमी वहाँ बैठेथे सब हँस पड़े.

११०—हलवाईकी मिठाई.

एक लड़का किसी हलवाईकी दूकानपर गया और चार आनेकी मिठाई माँगी हलवाईने एक हाँड़ीमें मिठाई रखकर उसके हवालेकी। लड़केने कहा "वजनतो कम मालूम होताहै" हलवाईने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हँसकरं जवाब दिया "अच्छीबातहै तुम्हें बोझा भीतो कम ढोना पड़ेगा" लड़का यह सुनकर बोला "ठीक कहतेहो" और तीन आनेपैसे हलवाईके सामने फेंककर चलता हुआ । हलवाई पुकारा "पैसे तुमने कम दियेहैं पूरादाम देतेजाओ" जिसपर लड़केने जवाब दिया "कुछ हर्ज़नहीं तुम्हें गिनना भी तो कमपड़ेगा."

१११—गेहूँका पेंड़.

एक दिन कोई राजा अपने मन्त्रीके संग शिकार खेलनेके लिये गयाथा कि वहाँ एक गेहूँका पेंड़ मनुष्यके डीलसे बड़ा देखकर आश्चर्य्यसे कहा कि ऐसा दरख्त मैं कभी नहीं देखाथा! मन्त्रीने निवेदन किया कि महाराज मेरे नगरमें गेहूँका वृक्ष हाथीके डीलसे बड़ा होताहै ! राजाने यहबात सुनकर हँसदिया जब वे शिकार खेलकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आये तो मन्त्रीने अपने नगरके लोगोंको कईएक पेंड़के लिये चिट्ठी लिखा परन्तु चिट्ठी पहुँचनेके पहलेही गेहूँकी ऋतु पूरी होगईथी इसलिये गेहूँका वृक्ष वहाँसे नआसका ! पर दूसरे वर्ष कईएक पेंड़ गेहूँके वहाँसे आये और मन्त्रीने राजाके सामने पहुँचाये ! राजाने पूँछा कि यह क्या मँगा-याहै ? मन्त्रीने कहा कि महाराज पिछ-ले वर्ष मैंने कहाथा कि मेरे नगरमें गेहूँका पेंड़ हाथीके डीलसे बड़ा होताहै इसपर आपने हँस दियाथा। मैंने सोचा कि महाराज मेरी बातको झूँठा समझते हैं इसलिये अपनी बातकी सचाईके लिये आपके सन्मुख मँगाके उपस्थित किया है। राजाने कहा अब मैं तेरी बातकी प्रती-तिकी परन्तु कभी किसीसे ऐसी बात नकहनी चाहिये जो सालभरके पीछे प्रतीतकरे.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

११२–ज्ञानगुटिका.

एक मनुष्यने किसी भिखारीके आगे जाके तीन प्रश्न किये (१) प्रश्न यहहै कि क्यों तू कहताहै कि ईश्वर सर्वत्र उपस्थितहै मैं नहीं देख-ताहूँ मुझे दिखला कहाँ है ? (२) प्रश्न यहहै कि मनुष्यको अपराधके लिये क्यों दण्डदेताहै ? क्योंकि जोकुछ करताहै सो ईश्वर करताहै उसमें मनुष्यकी कुछ सामर्थ्य नहीं और ईश्वरकी इच्छा-विना कुछ करनहीं सक्ताहै यदि मनुष्यको सामर्थ्य होती तो सबकाम अपने लिये भलाही करता ? (३) प्रश्न यहहै कि ईश्वर भूतको नरककी आगसे क्योंकर दण्ड देसक्ताहै ? उस्कीतो उत्पत्ति आगसेहै और आग आगमें क्या प्रवेशकर सक्तीहै ? जब सब प्रश्न करचुके तो भिखारीने एक बड़ासा ढेला उठाके उसके शिर पर मारा और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहा कि तेरे प्रश्नोंका उत्तर यहीहै। तब वह जाकर व्यवस्थापकके यहाँ नालिशकी कि मैं अमुक भिखारीसे तीनप्रश्न किये परन्तु उस्ने प्रश्नका उत्तर तो नहींदिया बल्कि एक बड़ा ढेला मारबैठा अब मेरे शिरमें बड़ी चोटलगी है तंब व्यवंस्थापकने उस भिखारीको बुलाकर पूंछा कि तुमने किसलिये इस्के शिरपर ढेला माराहै और इस्के प्रश्नोंका उत्तर क्यों नहींदिया? वह बोला उस्के प्रश्नोंका उत्तर ढेलाथा। वह कहता है कि मेरे शिरमें व्यथाहै सो दिखला सक्ताहै कि वह व्यथा कहाँ है? तो मैं ईश्वरको कैसे दिखलाऊँ! और उसने काहेको आपके आगे रो पुकारकी? यदि कुछ किया तो ईश्वरने किया और ईश्वरकी इच्छाविना मैं उसे नहीं मारा क्योंकि मुझे सामर्थ्यनहीं और उस्का जन्म माटीसेहै तो माटीसे उसे कष्ट क्यों कर पहुँचेगा? यह सुनकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह मनुष्य अति लज्जित हुआ और व्यवस्थापक नेभी भिखारीका उत्तर माना.किसीने ठीककहाहै दोहा–श्रवण नयनमुख नासिका,सबहींके इकठौर।
कहिबो सुनिबो देखिबो, चतुरनको कछुऔर॥

११३–वीरबलका बेटा.

राजा वीरबलका बड़ा बेटा संस्कृतका बहुत योग्य पण्डितथा । राजा वीरबलके मरने पर शाह अकबरने उससे पूंछा कि राजा वीरबलके साथ कितनी रानियाँ सती हुईं ? उसने जवाबदिया शूरता, उदारता, बुद्धि ये तीन रानियाँ तो महाराजके साथ सती होगईं सिर्फ एक कीर्ति यहाँ रहगई.

११४–जुझाऊ.

एक जगह दो चार आदमी बैठे कुछ बात-चीत कररहेथे इतनेमें कहींसे एक जुझाऊ आप-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुँचे और इनसे पूंछा कि आपलोग यहाँ बैठे २ क्या करतेहो ? वह बोले गप्प शप्प करतेहैं ! जुझाऊ बोला यहाँ बैठे २ किससे कैसी गप्प शप्प करतेहो ? आओ हमारे साथ चलो हम तुमको गप्प शप्प दिखावें ! ऐसा सुनकर सब उस्के साथ उठ खड़ेहुये ! चलते २ एक दह- कानीके दरवाज़े पर खड़ेहुये कि उस्की स्त्रीको पानीलाने जाते देखा! थोड़ीदेर बाद जब दहकानी घरआया और अपनी औरतको घरमें नपाया तो इनसे पूँछनेलगा क्योंजी ! तुमने मेरी घरवालीको तो नहीं देखा ? कहाँकोगई ? इसपर जुझाऊ बोला हाँदेखातोहै वह इसरास्तेसे उत्तरको गईहै दोतीन आदमी जोमुझे बदमाशसे मालूम पड़तेथे उन्हींके साथ गइह ! यह सुनतेही वह दहकानी घरके किंवाडे खुले छोड़कर उसतरफको दौड़ा । जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उस्की स्त्री पानी भरके लौटी तो उसने घरके किंवाड़े खुले देखकर इनसे पूछा कि हमारे घरके किंवाड़े किसने खोलेहैं ? जुझाऊ बोला तुम्हारा घरवाला आयाथा उसीने खोलेहैं । उसने बोला कहाँको चलागया, जुझाऊ बोला एकस्त्री नमालूम कहाँकी आईथी उसीके साथ इस रास्ते-से जो दक्षिणको जातीहै उसीके पीछे चलागयाहै। ऐसा हाल सुनतेही स्त्रीभी पानीका घड़ा रख उसी तरफको चली इतनेमें जुझाऊतो किसी बहा-नेसे वहाँसे चलदिये और वे वहीं खड़ेरहे ! थोड़ी-देरके बाद जब दहकानी उसरास्तेसे और उस्की स्त्री दूसरे रास्तेसे लौटकर दोनों घरआये तो लगे एक दूसरे पर जूतीपैजार चलाने ! वेलोग खड़े २ देख एक दूसरेसे कहनेलगे ये गप्पसप्प ठीकहै.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

११५—अमृतकी वर्षा.

एक समय रातमें किसी जगह कथा होरहीथी। बहुत आदमी सुननेके लिये आये इतनेमें एक आदमीको बैठे २ नींद आगई और एक कुत्ताने आकर उस्के मुँहमें पेशाब करके चलदिया! थोड़ी देर बाद जब कथा सम्पूर्णहुई सब लोग उठ२ अपने २ घरचले इनकोभी किसीने सोतेसे जगाया। जब घर आतेथे सब रास्तेमें कहने लगे कि भाई आज की कथामें क्या अमृतवर्षा (याने अच्छी बातें हुई)। इसपर जो आदमी सोयाहु-वाथा चट बोलउठा हाँ भाई!ठीक कहतेहो परन्तु अमृत कुछ २ खारा होताहै अगर आप यकीन नकरें तो मेरा मुँह चाटदेखो। अभीतक मेरे मुँहमें लगाहै यहसुन सब समझगये कि कुत्ता मूत गयाहोगा.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

११६-औसतका अर्थ.

एक पादरी साहब किसी स्कूलमें लड़कोंकी परीक्षा ले रहेथे एक लड़केसे सवाल किया कि औसत किसे कहते हैं ? लड़केने जवाब दिया जिस्में मुर्गी हरसाल अण्डे देती है पादरी साहब घबराये लड़का बोला कि किताब देख लीजिये इस्में यही लिखाहै और बड़ी शेखीसे अपनी किताब खोलकर उनके आगे रखदी जिस्में लिखाथा " मुर्गी औसत में हरसाल ५०० अण्डे देती है.

इति परिहासदर्पण प्रथम भाग सम्पूर्णम् ।

पुस्तक मिलनेका पता-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाडी-बंबई.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विक्रय्यपुस्तकें.

नाम.	की.रु.आ.
सिंहासनबत्तीसी	०—७
बैतालपच्चीसी	०—४
शुकबहत्तरी	०—६
हातिमताईका क़िस्सा	१—४
मोहनीचरित्र (फ़िसानाअज्ञायब क़िस्सा)	०—८
त्रियाचरित्र (कलियुगी स्त्रियोंके अनेक छल छिद्र और उनसे बचने का उपाय उदाहरणों समेत वर्णित है)	०—८
चहारदरवेश (बाग़ोबहार) बुद्धिचमत्कार करनेवाला चार योगियोंका वृत्तांत ...	१—०
बीरबलविनोद २०७ चुटकुले बीरबलका जीवन चरित्र समेत (उदासीनदशामेंभीपढ़नेसे हँसपडोगे)	१—४
गुलबकावली (कथारसीली विस्तारित अनुवाद)	०—१२
मलचमनूबेनजीर (दिलचस्प ग़ज़लें) ...	०—८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सासपतोहू (गृहच्चरित्र देखो) ... ... ०—८
देवीउपन्यास ... . १—०
अजीबलाश (देखो) ... ... ०—४
हनुमन्नाटक रामगीत भाषा—कविहृदयरामकृत अति ललित सवैया कवित्तादि छन्दबद्धमें परमोत्तम है ... ... ०—६
प्रह्लादनाटक लालाश्रीनिवासदासप्रणीत ... १—४
माधवानलकामकंदलानाटक—ऐसाप्रीतिप्रवाह ग्रंथदेखनेहीके योग्य है लालाशालिग्राम वैश्यकृत ... ... ०—१२
मोरध्वज नाटक—रौद्र वीर सत्य और भक्तिमार्गी करुणादि रससे परिपूर्ण भाषा लालाशालिग्राम कृत... ... ... ०—८
वेणीसंहारनाटक भाषा—करुणा हास्य और शांत व रौद्र रससे परिपूर्ण अत्युत्तम पण्डित ज्वालाप्रसादजीकृत... ... ... ०—१०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज २५।३० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्धहै कि, इस छापाखानेकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालय में प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे—वैदिक, वेदान्त,पुराण, धर्मशास्त्र,न्याय, मीमांसा, छन्द,ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू,नाटक,कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसर पर विक्रीके अर्थ तैयार रहतेहैं। शुद्धता स्वच्छता तथा काग़ज़की उत्तमता और जिल्द की बँधाई देश भरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दियाजाताहै। ऐसी सरलता पाठकों को मिलना असंभवहै संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों के मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है 'सूचीपत्र' मँगा देखो ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना—खेतवाड़ी—बम्बई.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.